www.thearyasamaj.org

जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष - ५५ अंक - १२
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १००) रु०
आजीवन - १०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

# आर्य-संसार

अग्रहन-पौष : सम्वत् २०७० वि० दिसम्बर, २०१३

सेठ श्री जुगल किशोरजी बिड़ला

www.thearyasamaj.org

# बिड़ला परिवार की सहायता

धनी, सम्पन्न, सेठ, साहूकार, व्यवसायी, कारबारी तो संसार में बहुत हुए हैं, बहुत होंगे भी । भारतवर्ष में ही धनी-श्रीमानों की कौन-सी कमी है, किन्तु बिड़ला परिवार की एक बड़ी विचित्र बात यह रही है कि वे श्रीमान् हैं, धनवान् हैं तो देश, जाति, धर्म के धर्म के लिए उनका कोष खुला रहता है । यों तो समस्त बिड़ला परिवार ही अपनी दानशीलता और धार्मिक उदारता के लिए प्रसिद्ध है, किन्तु धार्मिक जगत् में श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला और व्यवसाय एवं राजनीति के क्षेत्र में श्री घनश्यामदासजी बिड़ला अपने-अपने ढ़ंग से अद्वितीय ही हुए हैं । श्री बिड़लाजी ने सारे देश में और प्रत्येक अवसर पर अपनी अद्भुत सेवा-सहायता प्रस्तुत की है । यहाँ हम आर्यसमाज कलकत्ता के इतिहास से विशेषरूप से सम्बन्धित हैं । श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला जहाँ कहीं भी धर्म और हिन्दुत्व की पुकार होती थी वहीं अपनी श्रद्धा-भक्ति से उपस्थित हो जाते थे । आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियों से श्री जुगलकिशोरजी को विशेषरूप से परिचित कराते रहने का उत्तरदायित्व सेठ किशनलालजी पोद्दार ने अपनी इच्छा से ही अपने ऊपर लिया हुआ था ।

आर्यसमाज ने कन्या विद्यालय चलाकर एक क्रान्तिकारी कार्य आरम्भ किया था । उस युग में लड़कियों का पढ़ाना पाप समझा जाता था । लोग खुल्लम-खुल्ला स्त्री-शिक्षा के विरुद्ध लिखते-बोलते थे और इन पुत्री पाठशालाओं, कन्याविद्यालयों के लिए आर्य समाज की भर्त्सना ही करते थे । किन्तु बिड़लाजी का विचार धर्म, शिक्षा आदि के सम्बन्ध में बड़ा उदार था । उन्होंने इन सारे कार्यों में खुलकर आर्यसमाज की सहायता की थी । कन्या विद्यालय की स्थापना सन् १९०२ ई० में नाई टोला में की गयी थी । सन् १९०९ ई० में कन्या विद्यालय के अपने भवन का प्रयास आरम्भ हुआ तो सेठ श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला ने २५,००० रुपये कन्या विद्यालय के भवन के निमित्त दान किया । और कई सज्जनों ने भी दान दिया । इस धन से आर्यसमाज मन्दिर के बगल में जो आज २० नम्बर, विधान सरणी पर विशाल भवन खड़ा है, उस भूमि को खरीदा गया ।

समय के साथ कन्या विद्यालय का वह भवन छोटा पड़ गया और उसके निमित्त एक विशाल कन्या विद्यालय भवन का संकल्प अधिकारियों के मन में उदय हुआ । सेठ किशनलालजी पोद्दार ने इस प्रसंग को सेठ श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला के सम्मुख प्रस्तुत किया और आर्य कन्या विद्यालय के एक विशाल भवन की कल्पना साकार रूप लेने लगी। सेठ किशनलालजी ने बताया है कि सेठ श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला अपने आफिस से आते-जाते समय इस भवन को देखने के लिए प्रायः आ जाते थे और बांस की सीढ़ियों पर चढ़कर स्वयं निर्माण कार्य का निरीक्षण करते थे । एक दिन बनते हुए मकान की छत पर से उतरने पर श्री जुगलकिशोरजी के मन में क्या भाव उदय हुए कि उन्होंने श्री किशनलालजी पोद्दार को यह सलाह दी कि वे इस भवन का हिसाब अलग से रख लें । पीछे ७५,००० रुपये और देकर इस भवन को रानी बिड़ला भवन के नाम से बनवा कर श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला ने आर्य कन्या विद्यालय के लिए इतने बड़े स्थान की व्यवस्था कर दी । यह उनका कन्याओं को शिक्षा के प्रति उदार दृष्टिकोण था, उनकी दानशीलता थी और आर्यसमाज के प्रति सहयोग का भाव था ।

श्री बिड़लाजी निष्ठावान् सनातनधर्मी वैश्य सेठ थे । आर्यसमाज सुधारवादी आन्दोलन था । फिर भी श्री

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

# आर्य-संसार

वर्ष ५५ अंक — १२

मार्गशीर्ष-पौष २०७० वि०

दयानन्दाब्द १८९

सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४

दिसम्बर— २०१३

मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

*सम्पादक :*
**प्रो० उमाकान्त उपाध्याय, एम. ए.**

***सह सम्पादक :***
**श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल**
*सहयोगी संपादक :*
**श्रीमती सरोजिनी शुक्ला**
**श्री सत्य प्रकाश जायसवाल**
**पं० योगेश राज उपाध्याय**

## इस अंक की प्रस्तुति

| | | |
|---|---|---|
| १. आर्य समाज की गतिविधियाँ | | २ |
| २. इस अंक की प्रस्तुति | | ३ |
| ३. जीवन जीने की कला | | ४ |
| ४. महर्षि वचन सुधा-२७ | -प्रो० उमाकान्त उपाध्याय | ७ |
| ५. कुछ पर्वों के मनाने पर विचार | -प्रो० उमाकान्त उपाध्याय | १० |
| ६. वेद के भाष्यकार और महर्षि दयानन्द | -श्री कामता प्रसाद मिश्र | १३ |
| ७. ईश्वर, जीव व प्रकृति के अनादित्व पर विचार | -श्री मनमोहन कुमार आर्य | १७ |
| ८. कथनी और करनी में अन्तर क्यों ? | -श्री जसवन्त राय गुगलानी | २१ |
| ९. एक बार फिर आना होगा..... | -श्री हरि कुमार साहू | २५ |
| १०. महर्षि के शब्दों में वेदों की महत्ता | -श्री खुशहाल चन्द्र आर्य | २६ |
| ११. माता गोमती देवी अग्रवाल | -श्री निर्दोष कुमार अग्रवाल | २९ |
| १२. पथ प्रदर्शक | -श्रीमती कविता अग्रवाल | ३० |
| १३. बंगाल में बजा गया डंका वेद प्रचार का | -पं० वेदप्रकाश शास्त्री | ३१ |

**आर्य समाज कलकत्ता**

*१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६, दूरभाष : २२४१-३४३*

*email : aryasamajkolkata@gmail.com*

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है ।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा ।

www.thearyasamaj.org

१२

# जीवन जीने की कला

**विश्वदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।**
**तथा करद् वसुपतिर्वसूनां देवाँ ओहानोऽवसागमिष्ठः ।।**

ऋग्वेद ६-५२-२-५

**शब्दार्थ :–**

विश्वदानीम् = शाश्वत-सदा
सुमनसः = सुन्दर मन वाले, ईर्ष्या से रहित
स्याम = होवे, रहें
पश्येम = देखें
नु = अवश्य
सूर्यम् = सूर्य को, प्रकाश, ज्ञान को
उच्चरन्तम् = उगते हुए, उदय होते हुए
तथा = वैसा
तम् = उसको
करद् = कर दें
वसुपतिः = प्राणों के,ऐश्वर्य के पालक, रक्षक
वसूनाम् = प्राणों के, ऐश्वर्य के
देवान् = देवों को
ओहानः = जानने की, ऊहा की इच्छा करते हुए
अवसा = रक्षा, गति, कान्ति के साथ
आगमिष्ठः = निकटतम

---

**भावार्थ :–हम सदा सुमन बने रहें । हम सदा उदय होते हुए सूर्य को देखें । वसुओं के प्राण का पालन करने वाले-वसुपति ऐसा कर दें कि हम देवों को जानने, प्राप्त करने की इच्छा रखते हुए सदा उनकी रक्षा - गति - कान्ति के निकटतम बने रहें ।**

**व्याख्यान विन्दु :**

१. **सुमन बनने की प्रार्थना एक श्रेष्ठ प्रार्थना है ।**
२. **उदय होते हुए सूर्य से प्रेरणा लेना उत्तम कर्म है ।**
३. **वसु क्या है ? वासयतीति वसुः**
४. **देवों को जानना पर्याप्त नहीं, प्राप्ति की इच्छा भी पर्याप्त नहीं ।**
५. **देवों की रक्षा में कैसे निकट रहें ?**

### व्याख्या

सुमन फूल को कहते हैं । सुमन = सु+मन, सो सुमन का अर्थ है अच्छे मन वाला । अच्छा मन वह है जिसमें किसी के प्रति अशिष्ट बुरे विचार न आवें । सदा मन में फूल सी कोमलता, विचारों में मंगल

www.thearyasamaj.org
और मधु सी मिठास भरी हुई हो। सुमनता के शत्रु हैं झूठ, चुगली, ईर्ष्या, द्वेष। सुमन बनने के लिए शुभ-मंगल कामना का तप करें।

इस मंत्र का मुख्य आशय प्रार्थना का है। मंत्र में चार प्रार्थनाएं की गई हैं। (१) हम सदा सुमन बने रहें। (२) सदा उदयशील सूर्य को देखें। (३) हम देवों के दिव्य-गुणों को प्राप्त करें। (४) हम दिव्यता के निकटतम अर्थात् रक्षा में रहें।

ये प्रार्थनाएं वसुपति से की गई हैं। वसुपति परमेश्वर का वह रूप है, जो हमें बसाता है, हमारे प्राणों की रक्षा करता है और हमारे यश-ऐश्वर्य को पालता है।

हमारी पहली प्रार्थना है कि हम सदा सुमन बने रहें। सुमन को हिन्दी में फूल कहते हैं। सुमन का शब्दार्थ हैं -- सुन्दर मन है जिसका। अर्थात् सुन्दर मन वाला। फूल में सुगन्ध होती है। हमारे जीवन में यश की सुगन्ध सदा बनी रहे। हमारा यश ऐसा हो कि हमारे शत्रु भी एकान्त में अपने हृदय में हमारे यश को स्वीकार करें। रावण राम का शत्रु था किन्तु चरित्र से सदाचारी न था, कामुक था। ''दशाननों काममयो महाद्रुमः'' रावण काम का पहाड़ था। उसने सीता को पाने की बड़ी चेष्टा की किन्तु सफल न हुआ। एक कवि की कल्पना है--किसी ने रावण को सलाह दी कि ''रावण, तुम अपनी माया से राम का वेश बनाकर सीता के पास जाओ, शायद वह स्वीकार कर ले।'' रावण ने कहा, (कवि की कल्पना) मैंने यह भी कर लिया है। ''राम का रूप बनाय लखूं। परनारि लगै महतारी सी'' राम का यश उनके चरित्र का गुणगान रावण भी करता था। सुमन में दूसरी विशेषता यह होती है कि इसके हृदय में मधु भरा रहता है। प्रभु की कृपा हो और हमारे जीवन में जहां यश की सुगन्ध हो, वहां हृदय में सद्भावना, सहानुभूति की मधुरिमा सदा विराजती रहे। हमारा मन न मलिन हो, न कुटिल हो। हमारा मन सुमन हो। उसमें मिठास हो, परोपकार, सहानुभूति, सज्जनता हो। फूल में एक और विशेषता हैं कि वह खिला रहता है, कंटीली डालियों पर भी खिला रहता है। हम विपत्ति में भी उदास न हों। हमारे भी मन में सदा प्रसन्नता, उल्लास खिला रहे। सुमन होने से मनुष्य की दक्षता, कार्य-क्षमता, जन-प्रियता आदि सारे शुभ गुण बढ़ते रहते हैं। सो प्रथम प्रार्थना है कि हम सदा सुमन बने रहें। सुमन बने रहने के लिए स्वयं भी कुछ करना आवश्यक है। ईर्ष्या, घृणा, द्वेष, क्रोध इत्यादि मन को सुन्दर नहीं रहने देते। ईर्ष्या करने वाले का मन ईर्ष्या से, डाह से जलता रहता है। दूसरे उन्नति करते हैं, सफल होते हैं और ईष्यालु के मन में जलन होती है। इसी प्रकार द्वेष करने वाले का मन भी निरर्थक जलता है। जिसके मन में आग लगी हो, ईर्ष्या द्वेष से मन जल रहा हो वह सुमन नहीं हो सकता।

इसी प्रकार क्रोधी दूसरों पर शंका करने वाला, चिन्ता में ग्रस्त रहने वाला, कभी मन में संतुष्ट नहीं हो सकता और ईर्ष्यालु, घृणा करने वाला, द्वेष करने वाला, क्रोध करने वाला, चिन्तित रहने वाला, दूसरों को शक सन्देह से देखने वाला कभी सन्तुष्ट न रहेगा और उसका मन कभी सुमन नहीं बन पायेगा। सुमन होने की भी एक प्रक्रिया है, यह मन का तप है। भगवान् श्रीकृष्ण ने मन की तपस्या का एक सुन्दर सा सूत्र बताया है।

**मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।**

www.thearyasamaj.org

**भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ।।** गीता १७।१६

अर्थात् मन में प्रसन्नता हो, मन में मधुरभाव हों, मुनियों जैसा आचरण हो, अपने जीवन पर नियन्त्रण हो और कभी कुत्सित बुरी भावना मन में न उठे, तो मन प्रसन्न रहता है ।

दूसरी प्रार्थना है कि हम सूर्योदय के समय उगते सूर्य को देखें । इसका सीधा-सा अर्थ यह है कि हम सूर्योदय से पहले सो कर उठ जायें और उदय होते सूर्य का दर्शन करें । इससे हमें सुमनता मिलती है, स्वस्थ प्राण मिलते हैं और शरीर में ऊर्जा मिलती है । सूर्य प्राण और ऊर्जा का भण्डार है । उपनिषद के ऋषि कहते हैं कि सूर्य उगता है तो अपने साथ संसार में प्राण-तत्व की वर्षा करता है । उगते सूर्य के दर्शन से आंखों की रोशनी बढ़ती है और मस्तिष्क को ऊर्जा और प्राण मिलते हैं ।

उदयशील सूर्य का दर्शन करने से अपने कर्त्तव्य कर्म पर ठीक समय पर उपस्थित हो जाने की शिक्षा भी मिलती है । हम प्रार्थना करते हैं —

**वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्त्तव्य-मार्ग पर डट जावें ।**

**पर-सेवा पर-उपकार में हम, जग-जीवन सफल बना जावें ।।**

मंत्र में चौथी प्रार्थना यह है कि हम देवताओं के दिव्य-गुणों को जानें, उनको अपनावें और उनकी शरण में इतने निकट हो जायें कि देव-गण, उनके दिव्य-गुण हमारी रक्षा करते रहें । वस्तुतः कोई देव चरवाहों की तरह लाठी लेकर हमारी रक्षा नहीं करते । मन्त्र में प्रार्थना यह है कि हम देव गुणों को जानें समझें और उन गुणों के आचरण से हम अपने जीवन को सुरक्षा कवच प्रदान करें । मुख्यतः दो तरह के चरित्र हैं, देवचरित्र और दानव चरित्र । देव चरित्र में आचरण की पवित्रता, सत्यनिष्ठा, संयम,परोपकार आदि की गणना है । दानव चरित्र में इसका उल्टा होता है । दानव मिथ्याचारी, दुराचारी, परसन्तापी केवल अपने स्वार्थ से प्रयोजन रखते हैं । मन्त्र में हमारी प्रार्थना यह है कि भगवन् ऐसी कृपा करो कि हम देवचरित्र से सम्पन्न हो जायें और देवचरित्र. सत्यनिष्ठा, सदाचार आदि हमारी रक्षा करते रहें । जब हम देवगुणों को अपनाते हैं तो वे देवगुण हमारी रक्षा स्वयं करते हैं । देवगुणों का हमारे जीवन पर आकर्षक प्रभाव पड़ता है । और देवचरित्र की ओर, महात्मा चरित्र की ओर संसार स्वयं आकृष्ट हो जाता है । जैसे फूल पर, सुगन्धि पर भौरे आकर बैठते हैं, उसी तरह जहां मानवता के सद्गुण होते हैं संसार उधर स्वयं आकृष्ट हो जाता है । देवताओं के दिव्य-गुण से हमें ऐसी शिक्षा मिलती है, हमारा आचरण और जीवन ऐसा बन जाता है कि बुराइयां, दुर्गुण हमारे पास ही नहीं फटकते ।

**'मलिनता न दधाति गुणे पद्म ।'**

जहां सद्गुण वास करते हैं वहां मलिनता, विचार की नीचता, चरित्र की नीचता फटकती भी नहीं है । जिसके वस्त्र-स्वच्छ होते हैं, वह गन्दी जगह पर बैठना नहीं चाहता । जिसका आचरण जीवन, पवित्र होता है वह कुसंग, कुमार्ग और निकृष्ट स्थानों से बचता रहता है । यही प्रकार है जिससे देव-चरित्र हमारी रक्षा करते हैं । हमारा इतना ही कर्त्तव्य है कि हम दिव्य-गुणों के शरणापन्न सदा बने रहें ।

**साभार : वेद-वीथिका**

www.thearyasamaj.org

# ''महर्षि वचनसुधा'' – २७

–प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

**''अज्ञो भवति वै बाल:-पिता भवति मन्त्रद: ।**

**अज्ञं हि बालामित्याहु: पितेत्येव तु मन्त्रदम् ।।** —मनु०स्मृति अध्याय-२

*'क्योंकि चाहे सौ वर्ष का भी हो परन्तु जो विद्या, विज्ञानरहित है, वह बालक और जो विद्या, विज्ञान का दाता है, उस बालक को भी वृद्ध मानना चाहिए । क्योंकि सब शास्त्र आप्त विद्वान्, अज्ञानी को 'बालक' और ज्ञानी को 'पिता' कहते हैं ।''* —सत्यार्थ प्रकाश दशम् समु०

मनुस्मृति का यह श्लोक उद्धृत करके स्वामी जी यह बताना चाहते हैं कि आयु की अपेक्षा ज्ञान का महत्व अधिक है । बालक के ज्ञान कम होता है अतः बालः अज्ञानी का उपलक्षण है । जिसको ज्ञान नही है वो चाहे बड़ी आयु का भी हो जाये तो भी बालक ही है और जो ज्ञानवान हो वह आयु में कम होने पर भी मन्त्रदा है । यहाँ मन्त्रदः ज्ञानी का उपलक्षण है । महत्व आयु का नही ज्ञान का है ।

परिवर्ती काल में मन्त्र देना एक गुरु परंपरा चल पड़ी । मन्त्र देना एक परंपरा चल पड़ी । गुरु अपने मंत्र लेने वाले शिष्य के कान में गुप्त रीति से कोई शब्द या वाक्यांश बोल देता है और उसे रहस्यमय रीति से गुप्त रखने का उपदेश देता है । आजकल मन्त्रदाता का यही अर्थ लिया जाता है । एक उदाहरण देते है–

कोई व्यक्ति गुरुमन्त्र लेना चाहता है उसे **'गुरुमुख'** होना भी कहते हैं । गुरु **''नमो नारायणाय''** या **''नमो भगवते वासुदेवाय''** ओम् के साथ बोल देता है और शिष्य को कड़ाई से आदेश दे देता है कि यह **''ओम् नमो नारायणाय''** तुम्हारा गुरुमंत्र है । इसको किसी के सामने जोर से मत पढ़ना नहीं तो मन्त्र की महिमा उड़ जायेगी ऐसे **'कर्णफुकुआ'** लोगों को आज के युग में मन्त्रदाता कहा जाता है । यहां मनुस्मृति के श्लोक में मन्त्रदाता का यह अर्थ नही है ।

संस्कृत भाषा में मन्त्र का अर्थ परामर्श होता है, ज्ञान, परामर्श, उपदेश सबको मन्त्र कहते हैं । मन्त्र देनेवाला विद्वान् होना चाहिए, उसे अनुभवी भी होना चाहिए । मन्त्रदाता ज्ञान से माना जाता है । सिर के बाल पके हों, शरीर में झुर्रियाँ पड़ गयी हों तो इसे इस प्रसंग में वृद्ध नहीं कहा जायेगा । वृद्ध मन्त्रदाता होता है और इसी में उसका वृद्धपना निहित है । वृद्ध की पहचान यह है कि वह धर्मयुक्त जैसा उचित है वैसा धर्म की बात कहे–**''न ते वृद्धा: ए न वदन्ति धर्ममं''** वृद्ध को हमेशा धर्मयुक्त बात बोलनी चाहिए । **'नाऽसौ धर्मोयत्र न सत्यमस्ति'** । धर्म में हमेशा सत्य का ही समर्थन होना चाहिए । सत्य भी निश्छल हो–**'न तत् सत्यम् यच्छलेना भ्युपेतम्'** अर्थात् सत्य में कोई छल की बात

www.thearyasamaj.org

नहीं होनी चाहिए। जब युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य से कहा था—**'अश्वत्थामा मरो नरो वा कुञ्जरो वा'** तो यह सत्य होकर भी छलिया सत्य था अतः युधिष्ठिर ने न सत्य कहा था और न धर्म का पालन किया था।

मनुस्मृति के इस श्लोक में बाल और पिता को उपलक्षण से समझाया गया है। शिक्षा, ज्ञान, उपदेश देनेवाला मन्त्रदाता पिता है और चाहे इस मन्त्रदाता की आयु कम ही हो। जिसको परामर्श या ज्ञान दिया जाता है वह आयु में बड़ा होने पर भी बालक के समान है।

इस श्लोक में कनफुकुआ गुरुओं की महिमा नहीं बतायी गयी है।

''**विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य होने के कारण**—आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़नी-पढ़ानी, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेदविद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। क्या तुम लोग महाभारत की बातें तो पाँच सहस्र वर्ष के पहले हुई थीं, उनको भी भूल गये ?''

महाभारत के युद्ध को पाँच हजार साल से ऊपर हो गये। साधारण सी गणना यह बताती है कि महाभारत काल तक भारतवासियों के राज्य का वर्चस्व सम्पूर्ण विश्व में स्वीकार किया जाता था। रघुवंशी राजा रघु के राज्य में यूनान आदि देश सम्मिलित थे। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में बीसों देशों से राजा लोग उपहार लाये थे। कहने का मतलब यह है कि महाभारत काल तक, युधिष्ठिर के राज्य तक भारतवर्ष की गणना सर्वतन्त्र स्वतंत्र प्रभावशाली राज्य के रूप में होती रहती थी। सारे संसार के शासक भारतवर्ष को चक्रवर्ती सम्राट के रूप में स्वीकार करते थे किन्तु अंग्रेजों का युग आते-आते सारा देश बिखर गया, सम्पूर्ण देश विदेशियों, के विशेष करके, अंग्रेजों के शासन में चला गया।

प्रस्तुत उद्धरण में स्वामी जी उन कारणों को संक्षेप में बता रहे हैं जिनसे भारतवर्ष की स्वतंत्रता नष्ट हुई और विदेशियों का राज्य आया—

**१. आपस की फूट**—भारतवर्ष के कई महत्वपूर्ण युद्धों में भारतवासी राजा इसलिएं हार गये थे कि कोई भारतवासी विदेशी राजा से जा मिला था। उदाहरण के लिये सोमनाथ का मंदिर का युद्ध देख सकते हैं। विदेशी आक्रमणकारी उस युद्ध में हार गया था किन्तु मन्दिर के पुजारी के बेटे ने ईर्ष्या के वश में पड़कर आक्रमणकारियों को समुद्र से मंदिर में आने का गुप्तमार्ग बता दिया था और सोमनाथ की मंदिर का लूट जैसी हार का सामना करना पड़ा था।

एक और उदाहरण बड़ा प्रसिद्ध है। जयचन्द और पृथ्वीराज की आपस में मित्रता न थी। जयचन्द मुहम्मद गोरी से मिल गया था और पृथ्वीराज की पराजय का कारण बना था। इसी तरह उदाहरणों की कमी नहीं हैं जब अपने देश के राजा ने विदेशी की सहायता की। जब सिकन्दर ने आक्रमण किया था तो अम्भी ने महराजा पुरू से विरोध के कारण सिकन्दर की सहायता की थी। इस प्रकार

www.thearyasamaj.org

अनेकों—प्रायः सभी युद्धों में आपस की फूट विदेशियों से पराजय का कारण बन जाती थी ।

**२. ब्रह्मचर्य का सेवन न करना**—सामान्य रूप से शरीर की चार अवस्थायें मानी जाती है—(१) जन्म से २५ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य का पालन करना अर्थात् शरीर के रस, रक्त, धातु सबको परिपक्व होने देना । २५—५०वर्ष गृहस्थ का भोग काल है और ५०—७५ वर्ष परिपक्व साधना काल है । ७५ वर्ष से ऊपर संन्यास संसार का परोपकार का काल है । इन चारों वर्गों में ब्रह्मचर्य तक का २५ वर्ष का काल अत्यन्त महत्वपूर्ण है । शरीर की सबलता, धातुओं का परिपक्व होना मुख्य काम है । जब इस कालावधि में ब्रह्मचर्य का पालन नहीं होता तो शरीर विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित हो जाता है और शरीर की शूरता-वीरता नष्ट हो जाती है ।

**३. बाल्यावस्था में अस्वंयर विवाह :**—विवाह गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार युवक और युवती की पसन्द से होना चाहिये । जब आठ-दस वर्ष की लड़कियाँ और दस-बारह साल के लड़के विवाहित होने लगे तो शरीर निर्बल हो गया और लोग अल्पायु हो गये ।

राजपूतों के काल में साठ साल के महाराणा १५—१६ साल की लड़कियों का डोली उठवा लेना अपना सम्मान समझने लगे । यह सब पतन का कारण बना ।

**४. विद्या न पढ़ना-पढ़ाना :**—२५ वर्ष तक की आयु विद्या पढ़ने का कम से कम समय है । जब दस-बारह साल की आयु में विवाह होने लगे तो पढ़ना-पढ़ाना सब नष्ट हो गया । विद्या नष्ट हो गयी । जीवन की साधना, शास्त्र विद्या, शश्त्र विद्या, मल्ल विद्या, युद्ध विद्या सबका लोप हो गया ।

**५. वेद विद्या का अप्रचार :**— वेदों में जीवन के उत्थान की विद्याएँ हैं . जब तक देश में वेद विद्या का प्रचार रहा, लोग वेदों के अनुसार जीवन यापन करते थे तब तक छुआ-छूत, बाल विवाह, रोटी-बेटी आदि का पाप न था और देश सब प्रकार से उन्नति कर रहा था ।

स्वामी जी शोकातुर होकर लिखते हैं—

देखो । महाभारत युद्ध में सब लोग लड़ाई में सवारियों पर खाते-पीते थे । आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है । न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःखसागर में डुबा मारेगा ? उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्रहत्यारे, स्वदेश विनाशक, नीच के दुष्ट-मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख बढ़ा रहे हैं । परमेश्वर कृपा करे कि यह महाराज रोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाय ।

**'ईशावास्यम'**
पी-३०, कालिन्दी
कोलकाता-७०००८९

फोन (०३३) २५२२२६३६
चलभाष : ०९४३२३०१६०२

www.thearyasamaj.org

# कुछ पर्वों के मनाने पर विचार

प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

श्रावणी पूर्णिमा और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी में कभी आठ दिन और कभी नौ दिन का समय पड़ता है । श्रावणी वेद के स्वाध्याय का पर्व है और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी श्री कृष्ण जैसे महापुरुष के स्मरण का दिन है । बहुत सारे आर्य समाजों में यह ८—९ दिन की अवधि वेद सप्ताह के रूप में मनायी जाती है । इस अवसर पर तो आर्य समाज कलकत्ता में ६०—६५ वर्षों से अधिक का समय मेरे सामने का है । श्रावणी पूर्णिमा से जन्माष्टमी तक प्रातःकाल दो घण्टे वेद पारायण यज्ञ होता है । इन वेद पारायण यज्ञ का नेतृत्व जब से हमारे हाथों में आया तो हमने क्रमशः चारों वेदों का पारायण यज्ञ आरम्भ कर दिया । यजमान भी एक से अधिक दम्पति बनाये जाने लगे । इसका बड़ा सुफल यह हुआ कि जहाँ वेद पाठी पण्डितों के अतिरिक्त केवल ५—७ लोग आते थे वहां ६०—७०, कभी-कभी सौ के आस-पास भी लोग आ जाने लगे और वेद पारायण यज्ञों का कोलकाता में एक आन्दोलन सा आरम्भ हो गया ।

हम बहुत सीधे सुस्पष्ट शब्दों में स्वीकार कर लेते हैं कि इस तरह के यज्ञों का विधान प्राचीन ग्रन्थों में नहीं है किन्तु प्रचार की दृष्टि से अशास्त्री होने पर भी ये वेद पारायण यज्ञ उपादेय हैं । जैसे साप्ताहिक सत्संगों में अनेक लोग एक साथ बैठकर संध्या करते है और वार्षिक उत्सवों में कई सैकड़े लोग एक साथ सन्ध्या करते हैं, शास्त्र की दृष्टि से यह सामूहिक सन्ध्या भी शास्त्र विरूद्ध है फिर भी प्रचार की दृष्टि से उपादेह है । वैसे ही अनेक यजमान और एक से अधिक कुण्डों पर यज्ञ, प्राचीन शास्त्रों में न होने पर भी उपादेय है ।

हाँ, एक पाखण्ड इसके साथ चल पड़ा जैसे 'चतुर्वेद शतकम् पारायण वृहद् यज्ञ' का अनुष्ठान । प्रचार की दृष्टि से त्याज्य न होने पर भी घण्टे-डेढ़ घंटे में समाप्त होने वाला यज्ञ जनता को वृहद यज्ञ, और महायज्ञ बताया जाये तो यह अनुचित है । कभी-कभी जनता को बहकाने वाला सा लगने लगता है ।

**'अकरणान् मन्द करणं श्रेयः'** न करने से कुछ करना ठीक ही है । किन्तु यदि समाजों के पास धन और कार्यकर्ताओं का अभाव न हो तो वेद पारायण यज्ञ ही उचित है । अन्ततः हमारा नियम है–'वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्य समाज का परम धर्म हैं ।'

**वेद सप्ताह में कथा :–**बहुत दिनों से हम आर्य समाज कलकत्ता में वेद कथा करते रहे हैं । हमसे पूर्व बड़े-बड़े विद्वान्, जैसे पं० लोकनाथ तर्कवाचस्पति, आचार्य मुनिश्वर देव जी, पण्डित रूद्रदत्त शास्त्री, महोपदेशक ओम प्रकाश जी (खतौली), ठाकुर अमर सिंह जी जैसे बड़े-बड़े विद्वान् आते रहे

www.thearyasamaj.org

हैं और हम प्रायः प्रतिदिन कथा में जाते रहते थे। हमने यह लक्ष्य किया था कि रामायण, महाभारत, गीता, उपनिषद की कथा वेद सप्ताह में होती थी और १०–१५ लोग सुनने वाले होते थे। हमको स्मरण नहीं आता कि किसी वर्ष भी किसी विद्वान् ने वेद मंत्रों की कथा की हो। हाँ, यह तो ध्यान आता है कि कथा की विषय-वस्तु का चुनाव आर्यसमाज कलकत्ता के अधिकारी ही करते थे। हमने उस समय भी लक्ष्य किया था और आज भी सोचता हूँ कि इतने समर्थ, उच्चकोटि के विद्वानों से वेद मंत्रों की व्याख्या न सुनने का कोई कारण नहीं था। ये सब विद्वान् प्रथम श्रेणी के महोपदेशक थे और बड़ी सुन्दर व्याख्या वेद मन्त्रों की कर सकते थे। किन्तु न जाने क्यूं सब कुछ होता था, नाम वेद सप्ताह का और चर्चा वेद मंत्रों की नहीं होती थी।

जब अधिकारियों ने वेद सप्ताह में सायंकालिक कथा करने का भी दायित्व हमें सौंपा तो हमने वेद मन्त्रों की कथा करने का सुझाव दिया अधिकारियों ने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। हमने अनुभव किया कि यदि ये वेद मन्त्र छापकर श्रोताओं को दे दिए जायें तो सुनने वाले को बड़ी सुविधा होगी। साल दो साल के अनुभव से हम आठ-नौ मन्त्रों की एक पुस्तिका छपवा देने लगे। प्रतिदिन का एक मन्त्र और उसका शब्दार्थ, भावार्थ और मन्त्र में व्याख्यान बिन्दुओं को छपवाकर पुस्तकाकार बँटवा देने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि श्रोताओं की संख्या सैकड़ों में चली गयी और प्रायः आर्य समाज कलकत्ता का विशाल सभा कक्ष भर जाने लगा।

प्रचार भी संक्रामक होता है। आर्य समाज के लोग कथा में आते थे और आठ-नौ-मन्त्रों की पुस्तिका अपने साथ ले जाते थे। कई लोग अपने पड़ोसियों, मिलने-जुलने वालों को दिखाते थे। कई आर्य समाज के बाहर के लोग वेद मन्त्रों की व्याख्या सुनने में बड़ी श्रद्धा से भाग लेते थे। हमने लक्ष्य किया था कि आर्य समाज में न आने वाले बीसों-पच्चीसों लोग वेद कथा में उपस्थित हो जाते थे।

कई बार ये लोग श्रद्धा से वेद पारायण यज्ञों में प्रातः काल भी आते थे। हम प्रातःकाल के यज्ञ में वेद संहिता की पुस्तकें सुलभ रखते थे और वे वेद मन्त्रों का पाठ भी करते थे। ऐसे पुण्यार्थी वेद पाठी प्रातःकाल भी कई हो जाते थे। हमने बीसों-पच्चीसों सेट वेद संहिताओं के आर्य समाज में सुलभ करवा दिये थे। हम प्रातः काल आर्य समाज में संहिता सुलभ करने की अपील करते थे और लोग चारों वेदों का सेट दान कर देते थे। कभी-कभी तो एक ही व्यक्ति कई सेट का मूल्य दे देता था। इस प्रकार वेद पारायण यज्ञों और वेद कथाओं से, हमारी दृष्टि में, अच्छा वेद प्रचार हो जाता था। वेद भक्त विचार करेंगे।

## महर्षि का जन्मदिन तथा बोधदिन

कुछ वर्षों पहले यह निश्चित न हुआ था कि स्वामी दयानन्द जी की जन्मतिथि कब और क्या है। उस समय बोधदिवस को ही जन्मदिवस मान लिया गया था। कुछ वर्षों पूर्व यह अन्तिम रूप से निश्चित हो गया कि स्वामी जी महाराज का जन्मदिन फाल्गुन कृष्ण दशमी है। अब जन्मदिवस फाल्गुन कृष्ण

www.thearyasamaj.org
दशमी और बोधदिवस शिवरात्रि को निश्चित हो गया है। इस प्रकार जन्मदिवस और बोधदिवस में प्रायः चार दिन की अवधि का समय मिल जाता है। हमारे मन में आया कि जैसे श्रावणी पूर्णिमा से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वेद सप्ताह मनाया जाता है, उसी प्रकार स्वामी जी के जन्मदिन से बोधदिवस तक हम एक पर्व मना लें और हमने इसका नामकरण किया—

## महर्षि महिमा पर्व

हमने आर्यसमाज कलकत्ता के अधिकारियों से बात की और वे सब हमारी बात से सहमत हो गये और हमने महर्षि महिमा पर्व का विज्ञापन प्रकाशित कराकर कलकत्ता से सब आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों में वितरित करवा दिया। पहले वर्ष से ही आर्य जनता की प्रतिक्रिया बहुत अनुकूल रही। हमको भी व्याख्यान देना था और हम प्रतिदिन सायं महर्षि महिमा का एक-दो भजन और ४५—५० मिनट का व्याख्यान प्रस्तुत करने लगे। जनता की प्रतिक्रिया और उपस्थिति से हमें भी प्रोत्साहन मिला। इस प्रकार महर्षि महिमा पर्व का उत्साह वर्धक कार्यक्रम प्रतिवर्ष होने लगा।

उत्साह से उत्साह में वृद्धि होती है। महर्षि बोध दिवस को कलकत्ता के दैनिक यज्ञ करने वाले सभी परिवारों को अपना-अपना हवन कुण्ड लेकर सामूहिक, पारिवारिक यज्ञ के रूप में एकत्र करने लगे। कोलकाता के सभी आर्य समाजी विद्वान् और आर्य समाजी परिवार इकट्ठे होने लगे और हम इस बोधदिवस को और अधिक जनप्रिय बनाने की सोचने लगे।

हमारे मन में था कि गुरुनानक देव की नानक पूर्णिमा की तरह हम भी किसी पार्क में मेला का रूप दे दें। मेला का रूप तो नहीं बन सका किन्तु आर्य परिवारों को लेकर, एक खुला मंच बनाकर सामूहिक पारिवारिक यज्ञ का प्रोग्राम बन गया। ६०—७०—७५ कुण्ड इकट्ठे होने लगे। कभी-कभी दो-दो परिवार भी एक कुण्ड पर यज्ञ कर लेते है। यज्ञ, भजन और व्याख्यानों के पश्चात् प्रीतिभोज का भी प्रोग्राम होने लगा। अव्यवस्था से बचने के लिए अधिकारियों ने भोजन का पैकेट भी बनवाया आरम्भ कर दिया। जो भी हो ४—५ दिनों का महर्षि महिमा पर्व का अच्छा चल पड़ा है।

हमने आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के विचार करने लिए ये विचार प्रस्तुत किये हैं। आर्य समाज के उत्साही बन्धु इस पर विचार करेंगे, उचित लगे तो अपनाने का भी प्रयत्न करेंगे।

**प्रो० उमाकान्त उपाध्याय की नवीन कृति प्रकाशित**

**'मातृभूमि वैभवम् पृथिवी सूक्त विमर्श'**

मूल्य : १२५) रुपये मात्र

प्रकाशक : आर्य समाज कलकत्ता,

१९, विधान सरणी, कोलकाता-६

www.thearyasamaj.org

# वेद के भाष्यकार और महर्षि दयानन्द

**– श्री कामता प्रसाद मिश्र**

सृष्टि के प्रारम्भ में परमेश्वर ने मानव कल्याणार्थ वेद रूपी ज्ञान का प्रकाश किया । जो ज्ञान-विज्ञान के भण्डार हैं । वेदों के समझनें के लिए ऋषियों ने साधन स्वरूप छः वेदांगों—शिक्षा, कल्प, छन्द व्याकरण, निरुक्त तथा ज्योतिष की रचना की । इसके पश्चात् वेद के मंत्रों की कुछ व्याख्या रूप में ब्राह्मण ग्रन्थ की रचना की गई । परन्तु वेद समझने की समस्या का हल न निकला और भ्रान्तियाँ फैलने लगीं कि वेद की ऋचाएँ निरर्थक हैं क्योंकि समझ से परे हैं । इन्हीं समस्याओं को दूर करने के लिए ऋषियों-मनीषियों ने कठिन मंत्रों की व्याख्याएँ कीं । ये व्याख्यायें ही भाष्य और उनके रचयिता भाष्यकार कहे जाते हैं ।

वेद सर्वज्ञ परमात्मा की वाणी है, उसे यथार्थ रूप से समझना कठिन अवश्य है इसीलिए भाष्यकारों ने अपनी योग्यता एवं विचारों के अनुसार विशेष दृष्टिकोण लेकर व्याख्या किया हैं। सर्वांशसत्य और पूर्ण भाष्य सर्वथा असम्भव है क्योंकि वेद सर्वज्ञानमय हैं । वेद मन्त्रों की वैदिक ऋषियों तथा आचार्यों ने प्रायः तीन प्रकार के अर्थों के आधार पर व्याख्या किया है :

१. आध्यात्मिक—आत्मा, परमात्मा, शरीर सम्बन्धी ।

२. आधिभौतिक धन, भूत, प्राणी, राजा, प्रजा, समाज सम्बन्धी ।

३. आधिदैविक—सृष्टि के तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, यज्ञ, विद्युत, रुद्र आदि सम्बन्धी ।

वेद के भाष्यकारों में कुछ ने आध्यात्मिक, कुंछ ने आधिभौतिक और कुछ ने आधिदैविक व्याख्या किया । कुछ ने दो प्रकार की और कुछ आचार्यों ने तो तीनों प्रकार को अपनी व्याख्या का आधार बनाया ।

प्राचीनतम भाष्यकार के रूप में 'रावण' का नाम प्रसिद्ध है । महर्षि दयानन्दजी ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में उसका उल्लेख किया है परन्तु उसका भाष्य उपलब्ध नहीं होता । रावण के विषय में कल्पना की जा सकती है कि उसने वैज्ञानिक और भौतिक अर्थ की महत्ता देते हुए आधिदैविक भाष्य किया होगा।

प्राचीनतम भाष्यकारों में उपलब्ध भाष्य महर्षि यास्काचार्य का है जिन्होंने वेद के ६०० मंत्रों की व्याख्या 'निरुक्त' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ में किया है । यास्काचार्य जी के भाष्य से उनके सिद्धान्त का दिग्दर्शन होता है ।—

'वेद अपौरुषेय और नित्य हैं । वेद के सभी शब्द यौगिक हैं । वेद की तीन प्रकार की व्याख्या हो सकती है । धातुयें अनेकार्थक हैं । वेद में इतिहास नहीं है । सृष्टि क्रम का वर्णन है । व्यक्ति, स्थान,

www.thearyasamaj.org

नदी का इतिहास नहीं है ।

मंत्र में आया विशिष्ट पद तथा उसका अर्थ भी वेद का देवता (विषय) हो सकता है । मंत्रों का विनियोग अर्थ के अनुसार ही होना चाहिए आदि ।'

उक्त विशेषताओं से सुसज्जित व्याख्या महर्षि यास्काचार्य प्रणीत 'निरुक्त' से ज्ञात होता है जो पूर्ण वैज्ञानिक तथा तर्क सम्मत व्याख्या है ।

**आचार्य स्कन्दस्वामी**–संवत् ६८७ में विद्यमान स्कन्द स्वामी ऋग्वेद के भाष्यकार तथा निरुक्त के टीकाकार थे उन्होंने तीनों प्रकार की व्याख्या को महत्व दिया तथा साथ ही उन्होंने अर्थ की प्रधानता तथा यौगिक वाद का समर्थन किया ।

**आचार्य दुर्ग**–आचार्य दुर्ग की निरूक्त टीका प्रसिद्ध है । इन्होंने यास्क तथा स्कन्द के समान वेदार्थ की प्रक्रिया को एवं उनके सिद्धान्तों को स्वीकार किया है ।

**उद्गीथ आचार्य**–आपका भाष्य स्कन्दस्वामी के भाष्य के समान है तथा उनके सिद्धान्तों एवं विचारों का प्रतिपादन किया है किन्तु भाष्य आपका अपूर्ण है ।

**हरि स्वामी**–यह स्कन्द के शिष्य थे । शतपथ ब्राह्मण का भाष्य किया है इसलिए इन्हें भी वेद भाष्यकार का गौरव प्राप्त है ।

**वररुचि**–'निरुक्त समुच्चय' नामक ग्रंथ की रचना कर निरुक्त में आये मंत्रों का भाष्य किया है ।

**भट्टभास्कर**–११ वीं शताब्दी में यजुर्वेद संहिता का भाष्य किया ।

**उव्वट**–सम्पूर्ण यजुर्वेद का याज्ञिक अर्थ किया है, कहीं कहीं आध्यात्मिक अर्थ भी प्राप्त होता है।

**महीधर**–सम्पूर्ण यजुर्वेद का उव्वट के आधार पर भाष्य किया । परन्तु तांत्रिक भावना से ओतप्रोत, अत्यन्त घृणित, वाममार्गी भाष्य किया है ।

**वेंकट माधव**–१२वीं शताब्दी में हुए ऋग्वेद का भाष्य यज्ञपरक और संक्षिप्त है ।

**आत्मानन्द**–आपने वेद के कुछ मंत्रों का भाष्य किया–अग्नि का अर्थ परमात्मा किया है ।

**आनन्दतीर्थ**–सम्वत् १३३५ में विद्यमान आचार्य ने ऋग्वेद के आरम्भ के ४० सूक्तों की व्याख्या अध्यात्म परक किया है ।

**शत्रुघ्नाचार्य**–'मंत्रार्थ दीपिका' आपकी रचना है जिसमें आध्यात्मिक अर्थ किया है और यौगिकवाद के सिद्धान्त का समर्थन किया है ।

**गुण विष्णु**–आपने 'छान्दोग्य मंत्र भाष्य' नामक कृति में यज्ञ परक वेद मंत्र की व्याख्या किया है ।

**माधव और भरतस्वामा**–सम्वत् १३५० में सामवेद का भाष्य किया है ।

**देवपाल**–आपने अपनी कृति 'लौगाक्षि गृहसूत्र' में कुछ वेद मंत्रों का भाष्य किया है जो आध्यात्मिक तथा आधिदैविक दोनों प्रकार के हैं ।

**आनन्द बोध**–आपने यजुर्वेद की काण्व शाखा का भाष्य किया है ।

www.thearyasamaj.org

**सायणाचार्य**–विक्रम की चौदहवीं शताब्दी में दक्षिण के राज्य विजयनगर के राजा के प्रधानमंत्री थे । इन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद की व्याख्या यज्ञपरक तथा कर्मकाण्डपरक किया है । आपका ऋग्वेद भाष्य 'वेदार्थ प्रकाश' नाम से प्रसिद्ध है । सायण ने जहां वेद में इतिहास की कल्पना किया वहीं पर सुरापान, मांस भक्षण, यज्ञ में पशुबलि जैसे अनर्थ भी अपने भाष्य में सम्मिलित किया । सायण की भूल के ही परिणाम स्वरुप योरोपीय विद्धानों ने हमारे पवित्र वेद की बातों को नहीं समझा तथा वेदों पर आक्षेप कर हमारी सभ्यता, संस्कृति के उल्टे अर्थ किया । सायण के भाष्य को पढ़कर कोई भी वेदों को जंगली और गडरिया का गीत समझेगा । इनका भाष्य संकुचितविचारपूर्ण तथा बुद्धि विरुद्ध है । सायण भाष्य से वेदों के गौरव को बहुत बड़ी क्षति पहुँची है ।

योरोपीय विद्वान् प्रायः अनुवादक भाष्यकार हुए हैं और उन्होंने सायण भाष्य को ही आधार बनाया है । पाश्चात्य भाष्यकारों में मैक्समूलर, विल्सन, हिलेव्रान्त, मैक्डानल, ओल्डेन वर्ग सायण के अनुगामी बने । परन्तु राथ, ग्रासमन तथा लुदविग ने सायण के भाष्य का वहिष्कार किया ।

**महर्षि दयानन्द सरस्वती**—वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द जी ने घोषणा किया कि—

'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है । वेद ही स्वतः प्रमाण हैं और दूसरे अन्य ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं ।'

महर्षि दयानन्द ने सम्पूर्ण यजुर्वेद का तथा ऋग्वेद के सात मण्डल का भाष्य संस्कृत तथा हिन्दी में किया । जो पूर्ण युक्तिसंगत तथा वैज्ञानिक भाष्य है । आपने सभी वेद मंत्रों का अर्थ तीन प्रकार आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा अधिदैविक रूप से भाष्य किया । वेद के शब्दों को यौगिक मानकर भाष्य किया तथा प्राचीन ऋषियों यास्काचार्य और पतंजलि के सिद्धान्तानुसार वैदिक शब्दों को धातुज तथा यौगिक मानकर प्रकारणानुसार अनेक अर्थ किया । श्लेष, रूपक आदि अलंकारों का उपयोग महर्षि दयानन्द ने अपने वेद भाष्य में सर्वप्रथम प्रयोग किया । वेद को अपौरुषेय माना तथा वेद में किसी भी प्रकार के जादू टोना तथा इतिहास को पूर्ण रूप से नकार दिया । महर्षि के वेदभाष्य की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

१—वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा नित्य है ।

२—वेद में सभी सत्य विद्याओं का बीज है ।

३—वेद में किसी व्यक्ति का इतिहास तथा गाथाएँ नहीं हैं ।

४—वेद स्वतः प्रमाण हैं ।

५—वेद के सभी शब्द यौगिक हैं ।

६—सभी वेद मन्त्रों का तीनों अर्थ प्रक्रियानुसार हो सकता है ।

७—ऋषि मंत्रों के कर्त्ता नहीं अपितु द्रष्टा हैं ।

८—वेदमंत्रों का प्रतिपाद्य विषय ही देवता है ।

९—वेदमंत्रों का अर्थ करते समय व्यत्यय मानना आवश्यक है क्योंकि वेद से व्याकरण का

www.thearyasamaj.org

प्रादुर्भाव हुआ है । व्याकरण से वेद का नहीं ।

१०—मंत्र, और छन्द समानार्थक हैं ।

११—स्वर, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत तथा उदात्त अनुदात्त स्वरित आदि हैं जिनका अर्थ तथा उच्चारण में उपयोग है ।

१२—वेद नाम से केवल वेदों की चार संहिताएं समझना चाहिए अन्य नही । चार संहितायें है—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ।

उपर्युक्त विशेषताओं से युक्त महर्षि के भाष्य से सिद्ध होता है कि वेद ज्ञान विज्ञान के भण्डार हैं तथा सभी सत्य विद्याओं का मूल वेद में विद्यमान है जिसे परमेश्वर ने मानव के कल्याणार्थ सृष्टि के प्रारम्भ में उपहार दिया । महर्षि का भाष्य पूर्ण वैज्ञानिक प्रमाणित, युक्तिसंगत और पठनीय है जिसे श्रेष्ठ तथा सर्वोत्तम कहा जा सकता है ।

महर्षि दयानन्द जी के असामयिक स्वर्गवास से सम्पूर्ण वेद का भाष्य नहीं हो सका उनका चारों वेदों के भाष्य का संकल्प अपूर्ण ही रह गया ।

महर्षि के अनुयायियों ने महर्षि दयानन्द जी की भाष्य शैली को आधार लेकर चारों वेदों का भाष्य प्रस्तुत किया जो स्तुत्य प्रयास है । महर्षि के बाद के भाष्यकारों में शिवशंकर काव्यतीर्थ, तुलसीराम स्वामी, आर्यमुनि, क्षेमकरण दास, जयदेव विद्यालंकार, दामोदर सातवलेकर, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, विद्यानन्द विदेह, हरिश्चन्द्र शास्त्री आदि अनेक विद्वानों ने वेदभाष्य पर प्रशंसनीय प्रयास कर महर्षि के अधूरे कार्य को पूरा किया । इन विद्वानों के भाष्य महर्षि के सिद्धान्तानुसार किये गये हैं।

वेदों के पूर्ववर्ती भाष्यकारों में जैसे महीधर आदि ने जहाँ वेद के अश्लील वाममार्गी घृणित अर्थ करके वेद के गौरव और गरिमा का देश तथा विदेश में बदनाम किया और वेद मर्यादा को कलंकित किया वहीं सायण भाष्य में मांस भक्षण सुरापान, यज्ञ में पशुबलि आदि घृणित विचारों से वेद क़ी प्रतिष्ठा को बहुत क्षति हुई । परन्तु महर्षि दयानन्द जी ने वेद का युक्तिसंगत वैज्ञानिक प्रामाणिक तथा मानवतावादी भाष्य करके वेदों का पुनरोद्धार किया तथा वेद की गौरव गरिमा तथा प्रतिष्ठा को देश विदेश में पुनः प्रतिष्ठित किया । आज स्वामी जी के अनुयायियों द्वारा संसार की विभिन्न भाषाओं में वेद के भाष्य का अनुवाद करके विदेशों में वेद की लोकप्रियता स्थापित कर रहे हैं । स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी ने चारों वेदों का अंग्रेजी भाष्य किया जो विदेशों में लोकप्रिय हुआ और लोग आदर के साथ अध्ययन कर रहे हैं । आर्य विद्वानों का विश्व में जन-जन तक वेद वाणी को पहुँचाना प्रमुख उद्देश्य है ।

**म. नं. २४७५ निराला नगर, शिवपुरी, सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश**

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

# 'ईश्वर, जीव व प्रकृति के अनादित्व पर विचार'

–श्री मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के आधार पर ईश्वर, जीव व प्रकृति को इस ब्रह्माण्ड के अनादि पदार्थ या तत्व सिद्ध किया है। ऐसा मानने पर ही इस संसार की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय से सम्बन्धित सभी प्रश्नों का समाधान होता है। इसके विपरीत यदि इन तीन पदार्थों या तत्वों को नित्य, अनादि या अनादि न माना जाये तो इस संसार की रचना, स्थिति व प्रलय को सत्य व उद्देश्यपूर्ण सिद्ध करना सम्भव नहीं है। गीता में बहुत ही सुन्दर कहा गया है कि अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं होती और न ही भाव से अभाव उत्पन्न हो सकता है। यह दृश्यमान जगत सत्य है क्योंकि हमारी सभी पाँच ज्ञान इन्द्रियों से संसार का जो ज्ञान होता है, वह निर्भ्रम व संशय रहित है। सत्य व भाव शब्द किसी पदार्थ के अस्तित्व से सम्बन्ध रखते हैं और दोनों का अर्थ समान है। जो पदार्थ असत्य हैं अर्थात् जिनका अस्तित्व नहीं है, उन्हें अभाव न मानकर अभाव माना जाता है और जो पदार्थ सत्य हैं और जिनका अस्तित्व है उन्हें अभाव न मानकर भाव माना जाता है। विज्ञान भी मानता है कि some thing can be produced out of some thing but some thing can not be produced out of nothing, इसका अर्थ वही है कि भाव अर्थात् विद्यमान कारण तत्व से ही किसी उपयोगी नये पदार्थ को उत्पन्न या रचा जा सकता है, अभाव से कभी भी कुछ नहीं बनाया जा सकता।

ईश्वर, जीव व प्रकृति के अनादित्व पर विचार करने पर मनुष्य के मन में, यदा-कदा यह विचार स्वमेव आता है कि **ईश्वर, बिना किसी अन्य सत्ता के उत्पन्न किए हुए, अपने आप कैसे अस्तित्व में आया ?** दूसरे प्रकार से कह सकते हैं कि अनुत्पन्न ईश्वर का अस्तित्व स्वमेव कैसे व क्योंकर है ? इस पर विचार करने पर यह बात सामने आती है कि यदि वह उत्पन्न हुआ तो किसी दूसरे ईश्वर की आवश्यकता होती और जो ईश्वर को उत्पन्न करता उसको भी उत्पन्न करने के लिए उससे पूर्व अन्य ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार करना होगा। यदि ऐसा कुछ होता तो फिर पीछे की ओर जाने वाली एक श्रृंखला बन जाती जिसका कहीं अन्त ही न होता। यदि कोई ईश्वर किसी अन्य ईश्वर को बनायेगा तो उसके लिए वह तो निमित्त कारण होगा परन्तु उसे उपादान कारण की भी आवश्यकता होगी। दूसरा ईश्वर बन जाने पर पहला भी विद्यमान रहेगा और इस प्रकार से एक के स्थान पर दो ईश्वर हो जायेंगे। इस कथ्य को मान लेने पर इस प्रश्न का समाधान करना होगा कि बाद वाले ईश्वर को बनाने वाले ईश्वर का उपादान कारण रूपी पदार्थ, भाव व सत्य पदार्थ किस सत्ता से उत्पन्न होगा ? अतः ईश्वर को उत्पन्न करने के लिए जो उपादान कारण अपेक्षित था वह कहां से आया और उसे किसने कब व कैसे अथवा बिना किसी उपादान कारण के बनाया, तो किस प्रकार ? **यदि इस प्रकार ऐसा कुछ होता तो फिर जन्म होने के कारण उस ईश्वर की मृत्यु भी अवश्य होती। एक से अधिक ईश्वर के हो जाने**

www.thearyasamaj.org

**व उसके जन्म-मृत्यु में आबद्ध होने पर सृष्टि चल ही नहीं सकती थी।** संसार में कुछ मत व सम्प्रदायों के ऐसे बुद्धिजीवी भी हैं जिनके अनुसार कहा जाता है कि ईश्वर के समान एक दैवीय सत्ता थी, **उसने कहा कि हो जा, तो यह संसार अस्तित्व में आ गया।** हमारा यह मानना है कि **अतीत में मध्यकाल का समय अध्यात्म विद्या की दृष्टि से घोर अज्ञानता व अन्धकार का काल रहा है।** उन दिनों जो भी मनुष्य वा ज्ञानीजन थे वह मानसिक दृष्टि से वेद-कालीन ज्ञानियों, ऋषियों व विद्वानों की तुलना में अल्प शिक्षित व अल्प ज्ञानी थे जिनका मानसिक सामर्थ्य बहुत सीमित व अत्यल्प था। **यदि ऐसा नहीं होता तो जो विज्ञान व विद्याओं से युक्त आधुनिक युग आज विद्यमान है, वह ज्ञान, विज्ञान विद्या उस काल में भी होती।** यदि उन समयों में आर्कमिडिज का सिद्धान्त, न्यूटन की गति के नियम, परमाणुवाद, प्रकाश की गति, ध्वनि की गति आदि सिद्धान्तों का वर्तमान की तरह ज्ञान नहीं था तो उसका **कारण उस समय के लोगों में विद्या की कमी थी। अतः वह चाह कर भी इस सृष्टि को पूरी तरह से समझ नहीं सकते थे।** उस समय उन्होंने जो सिद्धान्त दिये वह चाहे धार्मिक या आध्यात्मिक जगत के हों अथवा अन्य ज्ञान व विज्ञान के, वह अपूर्ण थे जिनसे भ्रम व संशय उत्पन्न हुए और इसी कारण अन्ध विश्वास एवं कुरीतियों का प्रचलन हुआ। **अन्ध-विश्वास व कुरीतियों का जन्म अज्ञान व अविद्या से ही होता है।** बाद के महापुरुषों ने अपनी ऊहापोह, चिन्तन-मनन, अनुसंधान व खोज, विवेक व नये तथ्यों के प्रकाश में पूर्व के सिद्धान्तों को संशोधित व परिष्कृत किया। विज्ञान के क्षेत्र में तो संशोधन के सिद्धान्त को बिना किसी न-नुच के स्वीकार कर लिया गया परन्तु धार्मिक जगत में इसे स्वीकार नहीं किया गया क्योंकि वहां किन्हीं लोगों व समुदायों का स्वार्थ जुड़ा हुआ था तथा आज भी यही स्थिति विद्यमान है।

ईश्वर का कोई अन्य निमित्त या उपादान कारण नहीं है। इसका कारण यह है कि यदि यह प्रश्न उठाते हैं तो अनावस्था दोष आता है। कार्य-कारण सिद्धान्त के अनुसार जब हम कार्य का कारण खोजते हुए पीछे की ओर चलते है तो जहां जाकर हमें कार्य का कारण मिलता बन्द हो जाता है वह **अन्तिम कारण** होता है **जिसका कि कोई कारण नहीं होता एवं उसी को नित्य या अनादि पदार्थ कहा जाता है।** यहां कार्य प्रकृति का कारण तो कारण प्रकृति है परन्तु कारण प्रकृति का कारण कोई इतर पदार्थ नहीं है। **वह कारण प्रकृति स्वमेव ही कार्य व कारण दोनों है** वह जड़ जगत का आरम्भ है और **जब भी किसी रचना का आरम्भ होता है तो वह पूर्व पदार्थ प्रथम कारण-पदार्थ होता है जो कि अनादि व नित्य कहलाता है, जैसा कि इस जड़ संसार का अन्तिम कारण, भावरूप कारण-प्रकृति है एवं जो सत्व, रज व तम गुणों की साम्य अवस्था है** सत्व, रज व तम गुणों का अधिष्ठान जो गुणी है वह कारण प्रकृति कहलाती है। इस कारण **प्रकृति एवं इसके गुणों का अस्तित्व स्वमेव है अर्थात् इसकी सत्ता स्वयंभू सत्ता है** जो कि ईश्वर अथवा अन्य किसी भी सत्ता के द्वारा रचित व निर्मित नहीं है। यह कारण प्रकृति किसी उपादान कारण के फलस्वरूप सत्ता या अस्तित्व में नहीं आयी है। यदि इसे भावरूप न मानकर कार्य जगत को या कारण प्रकृति को ईश्वर से बना हुआ मानते हैं तो फिर ईश्वर को

www.thearyasamaj.org

ही इसका उपादान कारण भी मानना होगा । **ईश्वर सृष्टि का उपादान कारण इसलिए नहीं हो सकता चूंकि ईश्वर पूर्ण चेतन तत्व है जबकि प्रकृति में चैतन्य गुण का सर्वथा अभाव है ।** अतः कारण प्रकृति का कारण ईश्वर नहीं है । जब कारण प्रकृति का उपादान कारण ईश्वर व अन्य कोई पदार्थ है ही नहीं **तो यह सिद्ध हो गया कि कारण प्रकृति स्वयंभू सत्ता है जो अनादि व नित्य है । इसी सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर का भी निमित्त व उपादान कारण अन्य कोई न होने के कारण ईश्वर भी स्वयंभू है और वह भी अनादि व नित्य पदार्थ है** इन दो पदार्थो के अतिरिक्त तीसरा एक पदार्थ और पाया जाता है जो कि जीव कहलाता है । जीव अपने स्वरूप में एक चेतन पदार्थ है जो कि एकदेशी व अल्प सामर्थ्य से युक्त हैं परन्तु संख्या में असंख्य या अनन्त है । जीव का मुख्य स्वरूप चेतन होना पाया जाता है । चेतन तत्व ईश्वर भी है अतः यह कहा जा सकता है, और कुछ धार्मिक सम्प्रदाय ऐसा मानते भी हैं, कि **जीव ईश्वर का अंश है या हो सकता है ।** परन्तु ईश्वर की बनाई सृष्टि को देखने से ज्ञात होता है कि यह सृष्टि अनन्त एवं पूर्ण है । यदि जीव, ईश्वर के अंश होते तो अनन्त जीवों का जो सम्मिलित परिमाण है व वह जिन-जिन देशों में होते हैं, ईश्वर का वह जीव स्थानीय या देशीय अंश या भाग, जीव की ही तरह अल्पज्ञानी-शक्ति-सामर्थ्य वाला सिद्ध होता है, **तब वह ईश्वर इस ब्रह्माण्ड का निर्माण ठीक से न कर पाता ।** इसका कारण यह है कि ब्रह्माण्ड का वह भाग जहां पूर्ण परमात्मा का कुछ-कुछ भाग जो उससे पृथक जीव बना होता, उस भाग द्वारा व उसमें जो सृष्टि की रचना होती उसमें त्रुटियां या खामियां होती जिससे यह ब्रह्माण्ड पूर्ण रूप से निर्दोष न होकर दोषों से युक्त होता । प्रत्यक्षतः ऐसा नहीं पाया जाता है, **अतः यह सिद्ध है कि ईश्वर जीवों का निमित्त व उपादान कारण नहीं है । जीव का अपना स्वयं, निज का अस्तित्व सिद्ध है, अतः यह भी स्वयंभू सत्ता है । ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वसूक्ष्म है, जीव भी ईश्वर की तरह एक चेतन सत्ता है परन्तु वह ईश्वर से व्याप्य है । ईश्वर सर्वव्यापक है ।** कर्म फल का सिद्धान्त भी तभी सिद्ध होता है जबकि जीव को स्वतन्त्र सत्ता माना जाये और ईश्वर को सर्वव्यापक स्वीकार करें । यदि जीव को ईश्वर का अंश माना जाये तो प्रश्न खड़ा हो जाता है कि **क्या ईश्वर के अंश से पहले तो जीव बन गया फिर वही ईश्वर का भाग जो जीव बना उसे ईश्वर ही मनुष्यादि का जन्म देकर, अर्थात् स्वयं को ही, सुख-दुःख रूपी फल दे रहा है ? तो क्या जीव ने ईश्वर से पृथक होने से पूर्व कोई कर्म किये थे जिनका फल भोगने के लिए उसे जन्म दिया गया ? इस प्रश्न का उत्तर है कि ऐसा होना संभव ही नहीं है, अतः जीव की स्वतन्त्र सत्ता सिद्ध होती है और जीव की सत्ता ईश्वर व प्रकृति के समान नित्य व अनादि होने के कारण प्रवाह से जीव अपने पूर्व कर्मों का फल भोगने के लिए नाना योनियों में जन्म लेता है ।** यही स्वतन्त्र अनादि व नित्य जीवात्मा, मनुष्य आदि योनियों में आकर वेदों के ज्ञान को प्राप्त कर उसके अनुसार आचरण करके, योगाभ्यास, ईश्वरोपासना, यज्ञ, सेवा, परोपकार आदि सत्कर्मों को करके तथा अन्ततः ईश्वर का साक्षात्कार कर लेने पर विवेक सम्पन्न होकर मोक्ष को प्राप्त कर जन्म मरण के चक्र से छूट जाता है और मुक्ति की अवस्था में रहकर ईश्वर के सानिध्य से आनन्द को भोग कर यथासमय पुनः जन्म लेता है ।

www.thearyasamaj.org

उपर्युक्त विवेचन से **ईश्वर, जीव व प्रकृति का अनादि, नित्य व स्वयंभू सत्ता होना सिद्ध होता है।** अब यदि यह तीन पदार्थ अनादि व नित्य है तो इनका अजन्मा व अविनाशी होना भी स्वयं सिद्ध है। **अनादि, अजन्मा व नित्य पर्यायवाची शब्द हैं।** ऐसे पदार्थों का विनाश, मृत्यु, अन्त आदि कभी नहीं हो सकता है और न ही होगा, यह भी विवेक से सिद्ध है। तीन पदार्थों के अनादि सिद्ध हो जाने पर जीव के सामने केवल दो ही विकल्प बचते हैं कि या तो वह भोग के मार्ग को अपनाये और भोगों के फलों को भोगे या दूसरा मार्ग, समस्त सुखों का त्याग कर ईश्वरोपासना, यज्ञ, योगाभ्यास आदि कर्मों को करके ईश्वर का साक्षात्कार करे और इससे समस्त दुःखों व जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त हो जाये। यदि भोग मार्ग पर चलेगा तो जीव का पतन होगा और उसे बार-बार दुःखों को भोगना पड़ेगा और यदि वह योग व उपासना का मार्ग अपनाता है तो वह दुःखों से निवृत्त होकर मुक्ति को प्राप्त होगा। संसार का कोई भी प्राणी दुःख पसन्द नहीं करता एवं दुःखों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील देखा जाता है। **अतः भोग का मार्ग आपत्ति व विपत्ति का मार्ग है।** आवश्यकता केवल अचार्य, गुरुओं, अध्यापकों, माता-पिता व वृद्धजनों द्वारा सत्य का प्रचार करने की है। यदि वह सत्य को स्वयं जानेंगे और अपनी सन्तानों व अन्यों को जनायेंगे तो सभी जीव भोग व प्रेय मार्ग को छोड़कर श्रेय या त्याग के मार्ग पर चलेंगे और जीवन के उद्देश्य को पूरा करने में सफल होंगे। ऐसी स्थिति में संसार के सभी मत-मतान्तर समाप्त होकर केवल एक ज्ञान व विज्ञान तथा बुद्धि व तर्क की कसौटी पर पूर्णतः सिद्ध वैदिक मत ही प्रभाव में रहेगा जिससे विश्व में पूर्ण शान्ति स्थापित होगी और मानव जीवन ईश्वरोपासना व सत्य पथ का अनुसरण करने में व्यतीत होगा। **आइये, चिन्तन मनन करें और सत्य मार्ग का चयन कर उस पर अपनी पूरी शक्ति से चलें।**

**१९६, चुक्खूवाला ब्लाक-२, देहरादून-२४८००१,**
**ईमेल** manmohanarya@gmail.com

## गुरुकुल होशंगाबाद का १०२वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) का १०२ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १३, १४ १५ दिसम्बर २०१३ को आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव में देश के ख्यात नाम विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे तथा अध्ययनरत ब्रह्मचारी छात्रों के पाणि तथा वाणी के मनोहर कार्यक्रम देखने को मिलेंगे। आप समस्त गुरुकुल प्रेमी सज्जनों से निवेदन है उक्त कार्यक्रम में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें व विद्वानों के प्रवचनों से लाभ लें।

भावत्क :—आचार्य—योगेन्द्र याज्ञकि,
संयोजक-गुरुकुल महोत्सव, मो० ९४२४४७१२८८

www.thearyasamaj.org

# कथनी व करणी में अन्तर क्यों

**श्री जसवन्त राय गुगलानी**

महर्षि दयानन्द जी ने भारतवर्ष ही नहीं अपितु विश्व भर में व्याप्त अन्धकार को मिटाने का बीड़ा उठाया। स्वामी जी ने वेदों के विरुद्ध चल रही कुरीतियों को सामूलोच्छेदन करने के लिये आर्य समाज की स्थापना की तथा हमारे मार्ग दर्शन हेतु सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋगवेदादि भाष्य भूमिका जैसे ग्रन्थ लिख डाले। अब यह कार्यभार आर्यसमाजों पर है कि वे महर्षि के सपनों को साकार करें। क्या यह सम्भव है ? मेरी निजी राय में यह असम्भव प्रतीत होता है। हो सकता है कि पाठकगण मेरी इस धारणा से सहमत न हों। परन्तु मैं अपनी राय के समर्थन में निवेदन करना चाहूँगा कि खेतों की रक्षा बाड़ किया करती है। यदि बाड़ ही खेतों को नष्ट करने पर उतारू हो जाये तो खेत कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। स्वामी जी महाराज द्वारा दिखाये मार्ग व बताये मन्तव्यों का उल्लंघन आर्य समाज के कर्णधार, आर्य समाजों के अधिकारी गण ही कर रहे हों, जब वे स्वयं कुरीतियों व कुपरम्पराओं में लिप्त हो रहे हों तो आप पाठकगण स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि आर्य समाज का भविष्य क्या होगा ? इस लेख के माध्यम से मैंने आर्य समाज के साधारण सदस्य ही नहीं अपितु पदाधिकारियों को अपने मन्तव्यों के विपरीत आचरण करने के कुछ उदाहरण दिये हैं।

स्वामी जी महाराज ने मूर्त्ति पूजा का घोर खण्डन किया है। मैं कुछ आर्यसमाज के अधिकारियों से परिचित हूँ जो मञ्चों पर तो मूर्त्ति पूजा का खण्डन करते हैं परन्तु स्वयं शिवलिंग पर जल चढ़ाने जाते हैं। यह कार्य प्रातःकाल के अन्धकार में किया जाता है। एक आर्य समाज के अधिकारी ने घर में ही मूर्ति रखी हुई है तथा प्रतिदिन उसकी पूजा करते हैं। ईश्वर को निराकार मानने वाला व्यक्ति ईश्वर की प्रतिमा क्योंकर सम्भव समझने लगा।

एक अन्य सज्जन ब्रह्म यज्ञ (संध्या) नित्य प्रति करते हैं। परन्तु संध्या उपरान्त हनुमान चालीसा पढ़ते हैं। जब उनको इस पर चेताया गया तो उत्तर में उन्होंने कहा अपने पूर्वजों के गुणगान में आर्यसमाज को क्या आपत्ति हो सकती है। जहां तक पूर्वजों के गुणगान की बात है, मुझे उस पर आपत्ति नहीं है। महावीर हनुमान अत्यन्त बलशाली थे, वे गुणों के सागर भी थे। परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आता कि आर्यसमाज के मन्तव्यों को मानने वाला भूत प्रेत से कब से डरने लगा तथा सहायतार्थ हनुमान जी को पुकारने लगा। क्या ही अच्छा होता यदि ऐसे सज्जन, हनुमान जी के स्वामी सेवा के गुणों को अपने जीवन में अपनाते हुए जहाँ कहीं पर भी सेवारत हैं, लगन से सेवाकार्य को निभाते। दुष्टों के दलन में अपने बल का प्रयोग करते।

अब आइये एक और सज्जन से मिलायें। यह सज्जन किसी व्यक्ति के निधन पर श्रद्धाञ्जलि देते

www.thearyasamaj.org

हुए परमात्मा से उसको स्वर्गवासी करने की प्रार्थना करना नहीं भूलते ।

आप लोगों को विवाहोत्सवों के निमन्त्रण पत्र प्राप्त होते होंगे । अधिकांश आर्यसमाजियों के निमन्त्रण पत्रों के आमुख पृष्ट पर गणेश का चित्र होता है । एक आर्यसमाजी ने यह तर्क दिया कि बाजार में कार्ड ही ऐसी मिलते हैं । अव्वल तो मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ दूसरा यह कि कार्ड पर मुद्रित—

विघ्नहरण मंगल करण गणनायक गजराज ।

प्रथम निमन्त्रण आपको पूरण कीजै काज ॥

वक्र तुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः ।

निर्विघ्न कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

आदि तो छपे हुए नहीं होते, विडम्बना तो यह है कि प्रभु के निज नाम 'ओ३म्' का प्रयोग न करके गणेश जिसको हाथी की सूण्ड लगाकर प्रदर्शित किया जाता है हमारे कार्य सिद्ध करने में सक्षम है ।

एक आर्य समाज के अधिकारी ने पुत्र का विवाह किया, बधाई देने हेतु उनके घर पर जाना हुआ, देखकर अचम्भा हुआ कि प्रवेश पर ही वक्रतुण्ड की मूर्ति लगायी हुई थी । मैं कुछ सज्जनों से परिचित हूँ जो प्रतिष्ठित आर्यसमाजी हैं, प्रतिदिन प्रातःकाल घर पर यज्ञ करते हैं उनके फैक्टरी के कार्यालय में वक्रतुण्ड महाकाय विराजमान हैं तथा उनके आगे धूप दीप जलाया जाता है । वही क्यों, अधिकांश आर्यसमाजियों की फैक्टरी में गणेश जी की मूर्ति फैक्टरी के प्रवेश द्वार अथवा कार्यालय के अन्दर लगाई मिलेगी ।

मेरे एक आर्यसमाजी मित्र ने एक आर्य विद्यालय में स्थापित गणेश की मूर्ति पर घोर आपत्ति की परन्तु उनकी अपनी बैठक में ८-१० फुट का गणेश जी का चित्र लगाया हुआ मिला ।

आइये कुछ ऐसे व्यक्तियों के बारे लिखना चाहूँगा जो मात्र लोकेषु पूर्ति हेतु माता के जगरातों में न केवल सम्मिलित होते हैं अपितु मूर्ति के आगे आरती की थाली लेकर आरती करते भी नजर आते हैं । मुझे एक बहुत पुरानी घटना स्मरण है । मेरे साथ मेरी आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य भी थे, आर्य समाज के एक शीर्ष नेता को अपने कार्यक्रम में व्याख्यान के लिये आमन्त्रित करने गये थे । वह नेता उन दिनों सांसद थे, एक अन्य आर्य समाजी सांसद की शिकायत करते हुए बोले कि हमारी मार्किट में जगरात है और उन्होंने वहां यह कहकर कि मैं आर्य समाजी हूँ जगराते में सम्मिलित नहीं हो सकता जबकि मैं (आमन्त्रित किये जाने वाले नेता) जगराते में शामिल हुआ, कारण बताते हुए कि राजनीति में भाग लेने वालों को सब कुछ करना पड़ता है ।

मेरे एक अन्य मित्र हैं । आर्य समाज के अधिकारी हैं तथा पैतृक आर्य समाजी हैं । उनकी गाड़ी में उनके संग यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ । मार्ग में एक कार दुर्घटना ग्रस्त हुई पड़ी थी । कहने

www.thearyasamaj.org

लगे देखिये इस कार का नं० अन्त में १३ है। मैंने पूछा आपका यह कहने का अभिप्राय क्या है ? तो बोले १३, ११३, १०१३ या १३ के अंक से विभाजित होने वाली संख्या यानि २६, ३९, ११७ आदि अपशकुन होता है और इसलिये दुर्घटना होने की सम्भावना अधिक रहती है। मैं सोच रहा था कि इनके अनुसार गिनती में से १३ अथवा १३ से विभाजित होने वाले अंक निकाल देने चाहिये।

एक अन्य आर्य समाज के मन्त्री थे। उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से स्टोव महाशय को प्रश्नों के उत्तर देते देखा। स्टोव जी यदि हाँ कहना चाहते तो अपनी एक टांग उठाते थे। महाशय जी जड़ और चेतन का अन्तर ही नहीं समझ पाये। इतना ही नहीं उन्होंने श्री गणेश जी के फोटो को दूध पीते भी देखा। बन्धुओं, प्रकृति का नियम है कि भोजन तो जो भी करेगा वह मल का त्याग भी करेगा। विडम्बना तो यह है कि उन महाशय तथा उन समेत अन्य अनेक लोगों ने जो बुद्धि का प्रयोग ही नहीं करते ने गणेश जी के चित्रों व मूर्त्तियों को दूध पीता तो देखा पर मल विसर्जन करते नहीं देखा।

मेरी पूज्या बहिन जी हैं जो दयानन्द की तो दीवानी हैं पर उन के कार्य सिद्ध करते हैं बाला जी महाराज। बात-बात पर कहती हैं मेरे पर बाबा की कृपा है।

आर्य समाज के केन्द्रीय स्तर के अधिकारी अपनी माता जी की अस्थियों का विसर्जन गंगा जी में करने में बड़ा पुण्य मानते हैं।

मेरे एक अन्य मित्र जो आर्यसमाज के अधिकारी हैं तथा अपने वृद्ध जनों के देहान्त पर उनको चरण वन्दना करके उनके चरणों में नारियल तथा राशि चढ़ाते देखा गया।

एक अन्य महाशय जो प्रतिदिन यज्ञ करते थे। अन्य लोगों के घरों पर तो कुरीतियों तथाग़लत परम्पराओं का जोर शोर से विरोध करते थे परन्तु उनके अपने भ्राता की मृत्यु पर जब दिवंगत के चित्र पर पुष्प माला पहनाये जाने पर किसी ने आपत्ति की तो उसके उत्तर में उन्होंने तथा उनके अन्य भाई जो एक आर्य समाज के प्रधान थे आपत्ति कर्त्ता पर रोष प्रकट किया तथा कहा कि यह तो दिवंगत के लिये सम्मान सूचक है। तो क्या पौराणिक भाई राम व कृष्ण के चित्र पर पुष्प माला सम्मान हेतु नहीं डालते

मेरे एक अन्य प्रिय मित्र जो आर्य समाज के विभिन्न पदों को सुशोभित कर चुके हैं अपने भजन के माध्यम से उस प्रभु को पुकार कर राम की भाँति भीलनी के बेर खाने का निमन्त्रण देते हैं, कृष्ण के रूप में विदुर के साग खाने का निमन्त्रण देते हैं, और धनंजय को जैसे दर्शन दिये, मीरा के कृष्ण आदि के प्रति प्रेम के आधार पर पुकारते हैं। तो क्या अब यह समझा जाय कि आर्यसमाजी भी उस निराकार ईश्वर को साकार रूप में मानने लगे हैं जो बेर व साग खाएंगे।

मुझे सबसे बड़ा अचम्भा तो तब हुआ जब आर्यसमाज के एक महान् सन्यासी ने एक विशाल जन सभा को सम्बोधित करते हुए उपदेश दिया कि प्रतिदिन प्रातः धरती माँ को व सूर्य भगवान् को

www.thearyasamaj.org

प्रणाम किया करें । मुझे यह बात समझ नहीं आई कि क्या धरती व सूर्य जड़ नहीं हैं । उनके उपदेश का प्रभाव देखने को भी मिला जब मैं आर्य परिवार की एक देवी को सूर्य को नमस्कार करते तथा तुलसी को जल चढ़ाते देखता हूँ ।

बहुधा आर्य समाज के अधिकारी गण-पुत्री का विवाह करने के समय महर्षि के द्वारा बताये गये मार्ग को न अपना कर लड़के व लड़की के गुण व स्वभाव का मिलान करने की बजाय उनकी जन्म पत्री का मिलान करते हैं । आज भी ज्योतिषियों के चक्कर में पड़ते देखे गये ।

एक सज्जन, आर्यसमाज के प्रधान पद के चुनाव के समय हुए निर्णय कि कोई ऐसा व्यक्ति जो मांसाहार करता हो, धूम्रपान करता हो, मद्यपान करता हो, आर्य समाज के किसी पद को ग्रहण न करे और विपरीत घर में हुक्का पीते पाये गये । इतना ही नहीं बल्कि अपनी पुत्री के विवाह पर मद्यपान किये हुए मिले।

कुछ अधिकारी गण मांस व अण्डे खाने का विरोध तो करते हैं परन्तु पेस्ट्री खाने में कोई आपत्ति इन्हें नहीं होती ।

अब आर्य समाज के पुरोहितों के बारे निवेदन करना चाहूँगा । कुछ पुरोहित पौराणिक रीति रिवाज (विवाह आदि संस्कारों में) अपनाने में नहीं झिझकते । पूजा की थाली तैयार की जाती है जिसमें स्वास्तिक का चिह्न अङ्कित किया जाता है, आशीर्वाद हेतु अक्षत थाली में डलवाए जाते हैं । इतना ही नहीं कुछ पुरोहितगण पौराणिक विधि से सत्यनारायण की कथा आदि भी कराते हैं ।

अन्त में बड़े विनम्र शब्दों में निवेदन करना चाहूँगा कि आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य, कार्यकर्त्ता, अधिकारीगण, पुरोहितजन आर्यसमाज के मन्तव्यों व मान्यताओं व मर्यादाओं का पालन करें अन्यथा महर्षि के सपने साकार न हो पायेंगे ऐसा मेरा मानना है । पाठक गण इसको कैसा समझते हैं मैं नहीं जानता ।

H.No. 91/4,अर्बन एस्टेट, गुड़गांव (हरियाणा)-122001

दूरभाष -0124-2254316 M. 9999667647

## पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा

'पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा' इसलिए है कि जिससे सञ्चित प्रारब्ध बनते जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं इसीसे प्रारब्ध की अपेक्षा **पुरुषार्थ** बड़ा है ।

**( महर्षि दयानन्द सरस्वती )**

www.thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

# एक बार फिर आना होगा.......

–श्री हरि कुमार साहू

पाखण्डों के गढ़ में फिर वेदों का शंख बजाना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

१

खूब हो रही पत्थर-पूजा, निराकार प्रभु को हैं भूले।
नए नए पाखण्ड रचाकर, ढोंगी दलदल बाबा फूले।।
ऐसे धूर्त ठगों को अब **सत्यार्थ प्रकाश** पढ़ाना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

२

भारत में हिंदी की देखो कैसी दुखद हुई है दुर्गति?
जन-मानस में फिर स्थापित हो हिन्दी, ऐसा दो सन्मति।।
भारत माँ को हिन्दी के किरीट से पुनः सजाना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

३

नारी आज भोग्या बनकर भारत भर में लुटी पिटी है।
मातृ शक्ति को पूजित, सम्मानित करने की वृत्ति मिटी है।।
फिर से नारी को भोग्या से पूज्या हमें बनाना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

४

गूँजे बेटी की किलकारी, ऐसी बहे स्नेह की गंगा।
कन्या-भ्रूण मिटाने वालों को समाज में कर दें नंगा।।
बेटी के हत्यारों को अब फाँसी पर लटकाना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

५

भारत में कट रही आज भी नित नित लाखों गौ माताएँ।
इनकी दारूण व्यथा कथा हम किसे सुनाएँ ? किसे बताएँ ?
जन-जन में जाकर **गौकरूणानिधि** का अलख जगाना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

६

भूले मात पिता की सेवा, भूले वृद्ध जनों का आदर।
गुड्डा गुड़िया पूज रहे हैं, चढ़ा रहे कब्रों पर चादर।।
दसवाँ, मृतक भोज, तेरही, बरखी है व्यर्थ, बताना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

७

शाकाहार त्याग कर दुनिया हुई जा रही मांसाहारी।
धूम्रपान अरू मद्यपान से दस दिश फैल रही बीमारी।।
हो आहार विहार सात्विक, यह सबको समझाना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

८

पर्यावरण अशुद्ध हो रहा, प्रकृति हो रही है नित आहत।
जल, थल, वायु हो रहे दूषित, यज्ञ मात्र से होगी राहत।।
यज्ञ सर्व जन के हित में है, सबको यज्ञ कराना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

९

नया नाम डेटिंग का लेकर, खूब वैश्यावृत्ति हो रही।
नवयुवकों में बेशर्मी से इसकी अति आवृत्ति हो रही।।
सत्रह बार जहर खाया है, कई बार फिर खाना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

१०

वेद प्रचारित करने खातिर ईंटें, रोड़े, पत्थर खाए।
कष्ट सहे जीवन भर लेकिन अडिग रहे, तुम ना घबराए।।
वेदों के दीपक पर क्या तुम सा कोई परवाना होगा ?
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।
पाखण्डों के गढ़ में फिर वेदों का शंख बजाना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

–पूर्व मंत्री आर्य समाज, गोंड़पारा, बिलासपुर, (छत्तीसगढ़)

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

# महर्षि के शब्दों में वेदों की महत्ता

श्री खुशहाल चन्द्र आर्य

स्वामी जी चितौड़ से चलकर मिती द्वितीय श्रावण बदी १३ सं० १९३९ तदनुसार सन् १८८२ में उदयपुर पधारे। वहाँ नौ-लखा महल में विराजमान हुए। उदयपुर में पधारने के एक मास बाद मौलवी अब्दुर्रहमान ने स्वामी जी से वेदों सम्बन्धी कुछ प्रश्नोत्तर किये, जो इस भांति हैं।

१ प्रश्न —ऐसा कौन सा धर्म है, जिसकी धर्म पुस्तक सब मनुष्यों की बोल-चाल और प्राकृत नियमों को सिद्ध करने में प्रबल हो।

उत्तर—मत-सम्बन्धी सारी पुस्तकें हठधर्मी से भरी पड़ी हैं। इसलिए इनमें विश्वास के योग्य एक भी पुस्तक नहीं है। मेरी सम्मति में जो पुस्तक ज्ञान सम्बन्धी है, वहीं सत्य है। उसमें पक्षपात नहीं हो सकता। ऐसी ही पुस्तक का सृष्टि क्रम के अनुकूल होना सम्भव है। मेरे आज तक के अन्वेषण में वेद ही ऐसी पुस्तक है। वह किसी एक देश की भाषा में नहीं है। वह ज्ञानमय है और उसकी भाषा भी ज्ञान भाषा है। इसलिए वेद पर ही निश्चय करना चाहिए।

२ प्रश्न—क्या वेद, मत की पुस्तक नहीं है ?

उत्तर— नहीं, वह ज्ञान की पुस्तक है।

३. प्रश्न—मत का आप क्या अर्थ करते हैं ?

उत्तर—पक्षपात युक्त मन्तव्यों के समुदाय को मत कहते हैं।

४. प्रश्न—हमारे पूछने के अभिप्राय का उत्तर आपने वेद बताया है, सो क्या वेद में सब गुण पाये जाते हैं ?

उत्तर—हां ! पाये जाते हैं।

५ प्रश्न—आपने कहा कि वेद किसी देश की भाषा में नहीं है। जो भाषा किसी भी देश की नहीं है, वह सब भाषाओं पर कैसे प्रबल हो सकती है ?

उत्तर—जो देश विशेष की भाषा होती है, वह व्यापक नहीं हो सकती।

६. प्रश्न—जब वह भाषा किसी देश की नहीं है तो वह सब पर कैसे प्रबल हो सकती है ?

उत्तर—जैसे आकाश किसी एक स्थान का नहीं है, परन्तु सर्वत्र व्यापक है, ऐसे ही वेदों की भाषा देश-भाषा न होने से सब भाषाओं में व्यापक हैं।

७. प्रश्न—यह भाषा किसकी है ?

उत्तर—ज्ञान की।

८. प्रश्न—इसका बोलने वाला कौन है ?

उत्तर—इसका बोलने वाला सर्वदेशी परब्रह्म है।

www.thearyasamaj.org

९. प्रश्न—इसका सुनने वाला कौन है ?

उत्तर—इसके सुनने वाले अग्नि आदि चार ऋषि सृष्टि के आदि हुए हैं। उन्होंने परमात्मा से सुनकर सब मनुष्यों को सुनाया है।

१०. प्रश्न—ईश्वर ने यह भाषा उन्हीं को क्यों सुनाई ? क्या वे इस बोली को जानते थे ?

उत्तर—वे चारों सर्वोत्तम थे। ईश्वर ही ने उनको तत्काल भाषा का भी ज्ञान करा दिया था।

११. प्रश्न—आप इसमें क्या युक्ति देते हैं ?

उत्तर—कारण के बिना कार्य नहीं होता। यही युक्ति है और ब्रह्मादि ऋषियों की साक्षी है

१२. प्रश्न—भू मण्डल भर के सारे मनुष्य क्या एक ही कुल के हैं ?

उत्तर—भिन्न-भिन्न कुलों के हैं। आदि सृष्टि में उतने ही जीव मनुष्य-शरीर धारण करते हैं, जितने गर्भ सृष्टि में शरीर धारण करने के योग्य होते हैं। वे जीव असंख्य होते हैं।

१३. प्रश्न—इस पर कोई युक्ति दीजिए।

उत्तर—अब भी सब अनेक माँ-बाप की सन्तान हैं।

१४. प्रश्न—जो आकृतियां मनुष्यों की हैं, उनके तन क्या एक ही प्रकार के बने थे ?

उत्तर—आदि में मनुष्यों में रङ्ग और लम्बाई-चौड़ाई आदि का भेद अवश्य था।

१५. प्रश्न—सृष्टि की उत्पत्ति कब हुई ?

उत्तर—सृष्टि को उत्पन्न हुए एक अरब छयानबे करोड़ और कई लाख वर्ष बीत गये हैं।

१६. प्रश्न—आप किसी मत के नियमों का पालन करते हैं कि नहीं ?

उत्तर-जो धर्म ज्ञानानुकूल है, मैं उसके सारे नियमों का पालन करता हूँ।

१७. प्रश्न—क्या उपादान कारण अनादि है ? आप कितने पदार्थों को अनादि मानते हैं ?

उत्तर—उपादान कारण अनादि है। जीवात्मा, परमात्मा, और प्रकृति, ये तीनों पदार्थ अनादि हैं। इनका परस्पर संयोग-वियोग धर्म और कर्मों का फल-भोग प्रवाह से अनादि है।

१८. प्रश्न—जो वस्तु हमारी बुद्धि की सीमा से बाहर है, हम उसे अनादि कैसे मान लें ?

उत्तर—जो वस्तुयें नहीं है, वे कभी भी नहीं हो सकती। जो है, वे पहले भी थी और आगे को भी बनी रहेंगी।

१९. प्रश्न—वेद यदि ईश्वर का बनाया हुआ होता, तो सूर्यादि की भाँति सारे संसार के सब मनुष्यो को इससे लाभ पहुँचता।

उत्तर—वेद पवित्र, सूर्यादि पदार्थो की तरह सबको लाभ पहुँचाता है। सारे धर्मों के ग्रन्थों और विद्या की पुस्तकों का कारण वेद ही है। यह सबसे पहले है, इसलिए जितने शुभ विचार और ज्ञान की वार्त्तायें दूसरे ग्रन्थों में पाई जाती हैं, वे सब वेद से ली गई हैं। हानिकारक कथायें उन ग्रन्थों के कर्त्ताओं की अपनी मन-घड़न्त हैं। वेद में किसी का खण्डन-मण्डन नहीं पाया जाता, इसलिए वह पक्षपात रहित है जैसे सृष्टि-विद्या वाले सूर्यादि से अधिक लाभ लेते हैं, ऐसे ही वेद का अनुशीलन करने वाले वेद से भी अधिकाधिक उपकार प्राप्त करते है।

www.thearyasamaj.org

इस लेख से महर्षि दयानन्द की वेदों के प्रति आस्था एवं ज्ञान का परिचय होता है। इसीलिए महर्षि ने आर्य समाज के दस नियमों में तीसरा नियम 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ पुरुषों) का परम् धर्म है' बनाया है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है जिसे ईश्वर ने सृष्टि के आदि में चार ऋषिओं जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा थे, उनसे चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं क्रमशः कहलवाए। इनमें बताया गया है कि मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए उसे क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए। मनुष्य, वेदानुसार चलने से ही अपना तथा दूसरों का जीवन सुखी व आनन्दमय बना सकता है और अन्त में मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्त करता है। जहाँ एक लम्बी अवधि तक ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए परम आनन्द को प्राप्त करता है।

लेखक ने कविता रूप में महर्षि को वेदों का उद्धारक बताते हुए वेदों की महत्ता को इस प्रकार प्रकट किया है।

महर्षि दयानन्द ने इन्सानों को, बेहतर जीना सिखा दिया।
खोलकर बन्द स्त्रोतों को, पुनः वेदामृत पीना सिखा दिया॥

पड़ा हुआ था वह, अज्ञान, अविद्या के अन्धेरे में,
घूम रहा था वह, धूर्त्त, पाखण्डियों के डेरे में।
कर्म हीन बना हुआ था, पड़ा भाग्य के फेरे में,
मृत्य जीवन जी रहा था, निराशाओं के घेरे में,

वेद—सूर्य को चमका, अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड को मिटा दिया।
महर्षि दयानन्द ने इन्सानों को, बेहतर जीना सिखा दिया।
खोलकर बन्द स्त्रोतों को, पुनः वेदामृत पीना सिखा दिया॥

C/o गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स,
१८०, महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला) कोलकता-७०००००७

---

## आर्य समाज फेज–६, मोहाली की साधारण सभा की बैठक

आर्य समाज फेज—६, मोहाली की साधारण सभा की बैठक तिथि २२-०९-२०१३ को आर्य समाज मंदिर में हुई जिसमें निम्नलिखित व्यक्तियों को सर्व समिति से २०१३—१४ की कार्यकारिणी में निर्वाचित किया गया।

१) प्रधान—श्री निरेन्द्र गुप्त जी
२) मंत्री—श्री विजय आर्य तथा श्री कौडा जी
३) कोषाध्यक्ष—श्री राजेंद्र गुप्ताजी
४) आडिटर—श्री रवीजी
५) पुस्तकाध्यक्ष—श्री भाटिया जी
६) संरक्षक—श्री वाई. पी. कौडा तथा श्री किशोरी लाल सोनी जी।

www.thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

# माता गोमती देवी अग्रवाल

माँ का जन्म एक वैदिक परिवार में हुआ था। जबसे मैंने होश सम्भाला अपनी माँ को प्रातः व सांयः सन्ध्या-उपासना करते हुए देखा है। माँ अपने दैनिक कार्यों के दौरान भी ईश्वर-भक्ति के भजन आदि गुनगुनाती रहती थीं। मेरी माँ बहुत ही सरल-स्वभाव किन्तु तेज बुद्धि की महिला थी, उनकी तेज याददाश्त के बारे में परिवार के सभी लोग भली भाँति परिचित हैं।

हमारा परिवार एक मध्यम श्रेणी वर्ग में आता है। हमलोग पाँच भाई-बहन हैं। मैं सबसे छोटा पुत्र हूँ। तमाम् आर्थिक कठिनाईयों के पश्चात् भी माँ ने हमें अच्छे संस्कार दिए हैं तथा जीवन में अच्छे मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित किया है। माँ को ईश्वर पर सम्पूर्ण विश्वास था और हर कठिनाई में उन्होंने ईश्वर को ही अपना सच्चा सहारा बनाया।

वैसे तो जीवन में माँ-पिताजी का बराबर का योगदान रहा फिर भी माँ ने हमेशा जीवन में आगे बढ़ने की मेरी लगन को विशेष प्रोत्साहन दिया। यह उन्हीं के प्रोत्साहन और उनसे मिली प्रेरणा का ही फल था कि मैं अपनी सी. ए. की पढ़ाई को बिना किसी ट्युशन के फस्ट एटम्पट में पास कर सका। वे हमेशा कहती थीं कि जीवन में बड़ा आदमी बनना अच्छी बात है लेकिन उससे भी अच्छी बात हैं कि हम एक अच्छे इन्सान बनें और अपने परिवार तथा समाज की उन्नति में सहायक बनें।

मेरे पिताजी Paralysis के कारण सोलह वर्ष पर्यन्त पूर्णतया बिस्तर पर थे और माँ ने उस दौरान भी अपने स्वास्थ्य को दाँव पर लगाकर उनकी निरंतर सेवा की। पिताजी का देहान्त २२ दिसम्बर २०१३ में हुआ था। उनके देहान्त के बाद माँ के स्वास्थ्य में धीरे-धीरे गिरावट आती चली गई, जिसका कारण हम सब लोग भली-भाति समझ सकते हैं। पिताजी के देहान्त के प्रायः दस महीने बाद अर्थात् ४-११-२०१२ को माँ भी हम सबको छोड़कर चली गई। माँ और पिताजी दोनों का साया इतनी जल्दी हमलोगों के ऊपर से उठ जायेगा, इसकी कल्पना भी हमने नहीं की थीं। उनके देहान्त के पश्चात् ऐसा लग रहा है मानों किसी ने भरी दोपहरी में हमारे सिर से छाता हटा दिया हो। लेकिन हम विधि के विधान के आगे विवश है। देहान्त के ठीक पहले भी माँ ईश्वर से यही प्रार्थना कर रही थी कि उनके सभी बच्चे सुख-शांति से रहे और जीवन में तरक्की करते रहे। माँ आज अपने पीछे अपना भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई है। हम सभी ईश्वर से यहीं प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को सद्गति एवं शन्ति प्रदान करें व उनके परिवार को उनके दिखाए मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करते रहें। माँ आज हमारे बीच में शारीरिक रुप से विद्यमान नहीं हैं, किन्तु आज भी उनको याद कर अनायास ही आँखें नम हो जाती है। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि मुझे हर जन्म में उनके पुत्र या पुत्री बनने का सौभाग्य प्रदान करें।

**–निर्दोष कुमार अग्रवाल, (कनिष्ठ पुत्र)**

www.thearyasamaj.org

## मेरी सास–मेरी पथ प्रदर्शक

मेरा जन्म सनातनी परिवार में हुआ था। मैं बहुत ज्यादा पूजा-पाठ करती थी। जब मेरी सगाई हुई तो पता चला कि ससुराल वाले भगवान को नहीं मानते और ना ही घर पर मन्दिर है। मैं बहुत रोई यह सोचकर कि अब मैं किस तरह पूजा करूँगी। परन्तु मेरे-माता-पिता ने मुझे यह समझाया कि पति का धर्म ही अब तुम्हारा धर्म है, वहां जो पूजा हो तुम वही करना। शादी के एक महीने बाद दिसम्बर में होने वाले वार्षिकोत्सव पर मैं यजमान बनी। इतने बड़े यज्ञ में यजमान बनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। उस दिन पता चला कि सच्ची पूजा तो मेरे ससुराल वाले ही करते हैं। बचपन से ही मन में एक जिज्ञासा थी कि जब ईश्वर एक हैं, वह निराकार, अजर, अमर और अविनाशी हैं तो हम इतने देवी-देवताओं की पूजा क्यों करते हैं ? इस जिज्ञासा को शान्त किया आर्य समाज ने।

अब मैं अपनी मूल बात पर आन चाहूँगी कि यदि मेरी सासूमाँ मुझे यह नहीं बताती कि आर्य समाज क्या है तो मैं कभी भी आर्य समाज में जा नहीं पाती। आर्यसमाज ने मेरे पूरे जीवन की विचारधारा को ही बदल दिया, मुझे एक नई दिशा मिली। इन सबका श्रेय मेरी सासूमाँ को जाता है। वे मेरी पथ प्रदर्शक थीं।

चूंकि मेरी सासूमाँ वैदिक परिवार में पली-बढ़ी तथा ससुराल भी वैदिक था इसलिये वे कट्टर आर्य समाजी थीं। वे मन की भोली, शान्त स्वभाव, सत्यवादी, सन्तोषी तथा कुशाग्र बुद्धि की महिला थी। कम शिक्षित होने के बाबजूद भी उनका गणित काफी अच्छा था। दूधवाला हो या घर की मासी, सबका हिसाब तुरन्त कर देती थी, मैं तो सोचती ही रह जाती थी।

मुझे आर्य समाज में जाने के लिये प्रेरित करती थी। स्वयं तो ससुर जी की अस्वस्थता के कारण समाज में जा नहीं पाती थीं परन्तु समाज से लौटने के पश्चात् मुझसे सत्संग की सारी बातें सुनती थीं। जब भी समाज में दान देना होता था तो वे हमेशा तैयार रहती थीं। पाँवों में दर्द रहता था तो भी श्रावणी पर्व, वार्षिकोत्सव और महिला सम्मेलन में प्रायः जाती थी।

उन्होंने अपने जीवन में बहुत कष्ट सहे, परन्तु ईश्वर पर इतनी आस्था, विश्वास और भरोसा था कि वे हर मुसीबत में अपने आपको अच्छी तरह से सम्भांल लेती थी। उन्होंने चिन्ता को अपने जीवन पर हावी नहीं होने दिया। जिसका परिणाम था कि ७२ वर्ष की आयु में भी वे मधुमेह और ब्लडप्रेशर जैसी बीमारियों से दूर थीं।

अन्तिम समय में वे छः महीने से चलने-फिरने में असमर्थ थीं और दिवाली के दूसरे दिन सुबह सासूमाँ उस परमपिता के बनाये नियम के अनुसार हम सबको छोड़कर सर्वदा के लिये चली गई। आज भी यह विश्वास नहीं होता कि वे हमारे बीच नहीं हैं।

मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि वे सासमाँ को सद्गति प्रदान करें और उनका पूरा परिवार आपस में मिलकर रह। उनके आदर्शों पर चलें। उन्हीं की तरह जीवन में कभी निराश-हताश न हों। प्रभु पर अटूट विश्वास करें, किसी का दिल न दुखाये और सबसे प्यार करें। यहीं उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

**कविता अग्रवाल** (पुत्रवधू)
(मंत्री, आर्य स्त्री समाज)

www.thearyasamaj.org

# बंगाल में बज गया डंका वेद प्रचार का

सुदीर्घकाल की उदासीनता से बंगाल के निष्क्रिय, निस्तेज आर्य समाजों को पुनः जागृत करने की कामना से हमने बंगाल तथा बंगाल के बाहर पचासों बंगभाषी विद्वानों की एक गोष्ठी बनाकर एक संस्था 'बंगीय वेद प्रचार सभा' बनाई, जिसके अधीन मेदिनीपुर शहर में एक नूतन आर्य समाज की स्थापना की ओर 'बंगीय वेद प्रचार सभा' तथा आर्य समाज मेदिनीपुर के तत्वावधान में मेदिनीपुर शहर स्थित सुप्रसिद्ध विद्यासागर हॉल में मेदिनीपुर जिला के शताधिक तथा आस-पास जिले के सभी आर्य समाजों को एकत्रकर एक विशाल वेद प्रचार सम्मेलन १६—१७ नवम्बर २०१३ को बड़े ही धूमधाम, उत्साह, उल्लास तथा आनन्द के साथ सुसम्पन्न किया, जिसमें आर्य समाज कलकत्ता, आर्य समाज बड़ाबाजार, आर्य समाज हावड़ा, स्त्री आर्य समाज भवानीपुर का तन-मन-धन से स्वतःस्फूर्त, उदार तथा अकृपण सहयोग रहा है। इस सम्मेलन में जो कुछ देखा, जो कुछ सुना और जो कुछ अनुभव किया आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत है।

प्रातः सुबह ५ बजे से ७ बजे तक पतञ्जलि योग समिति, मेदिनीपुर के तत्वावधान में सहस्र आर्य नर-नारियों की सहभागिता में योग प्रशिक्षण शिविर सुचारु रूप से चलता रहा है, जिसका उद्घाटन श्री चाँदरतन दम्मानी ने किया और अतिथि के रूप में श्री रमेश अग्रवाल उपस्थित थे।

प्रातः ८ से १० बजे तक पं० वासुदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व, आचार्य ब्रह्मदत्तार्य के संयोजकत्व और पण्डिता अर्चना शास्त्री, पण्डिता मीरा शास्त्री और गुरुकुल अवादा की ब्रह्मचारीणियों के ऋत्विजकत्व में भव्य, सुरम्य, प्रेरणाप्रद तथा चित्ताकर्षक श्रद्धा, भक्ति और उत्साहपूर्ण वातावरण में बहुकुण्डीय विशाल विश्वकल्याण महायज्ञ हुआ। बंगाल में यज्ञ में इस प्रकार उमड़ती हुई भीड़ सारे बंगाल के इतिहास (आर्य समाज) में अतुलनीय, अवर्णनीय तथा चिरस्मरणीय प्रथम और प्रशंसनीय प्रयास था।

पश्चात् प्रातः १० बजे आर्य जगत के विशिष्ट लेखक, चिन्तक ऋषिभक्त, सम्मेलन के संरक्षक श्री खुशहाल चन्द्र आर्य जी ने ओ३म् ध्वज फहराया, तदनन्तर सुबह १०-३० बजे प्रसिद्ध समाज सेवी उद्योगपति, मार्स प्लाई के मालिक, डी.ए. वी. शिलीगुड़ी के महामन्त्री ऋषिभक्त श्री रोशनलाल अग्रवाल ने दीप प्रज्वलन करके सम्मेलन की शुरुआत की, उनके साथ दीप प्रज्वलन कर रहे थे मुख्य अतिथि श्री जगदीश प्रसाद केडिया, प्रधान, बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा, विशेष अतिथि श्रीमती शशि नागपाल, श्री चांदरतन दम्माणी, आदि महोदयगण। सभी आर्य नेताओं ने आर्य जनता को महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी क्योंकि यही मानव जाति के उत्कर्ष तथा विश्वकल्याण का एक मात्र रास्ता है।

पश्चात् उपस्थित आर्यजनों, अतिथिगण, विद्वानों तथा कार्यकर्त्ताओं को समारोह के स्वागताध्यक्ष श्री श्रीराम आर्य और स्वागत मन्त्री श्री प्रमोद आर्य ने अभिनन्दन, स्वागत तथा धन्यवाद किया।

१६ नवम्बर अपराह्न २ बजे से ५ बजे तक शोभा यात्रा में सहस्राधिक नर-नारी आबाल-वृद्ध-वनिता तथा विभिन्न गुरुकुलों के ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणीगण हँसी, खुशी, उत्साह, उल्लास, उमंग तथा आनन्द

www.thearyasamaj.org
के साथ भजन, कीर्तन और जयघोषों की गगनभेदी ध्वनियाँ चहुँ ओर मुखरित करते हुए नगर की शोभावृद्धि कर रहे थे।

गुरुकुल टाटा और सनातन मिशन आर्य विद्यालय नाईकुण्डी के १०—१२ वर्ष के बालकों के शारीरिक कलाबाजी तथा बैण्ड पार्टी की वाद्यकला के कौशल देखकर हम दंग रह गए। शोभायात्रा में सहस्राधिक गाती हुई, झूमती हुई आर्यजनता का उत्साह और उल्लास देखते ही बनता था। ऐसा बंगाल के इतिहास (आर्य समाज) में अतुलनीय अवर्णनीय प्रथम एवं अभूतपूर्व प्रयास था। मैं कलकत्ता नगरी से आगत आर्य नेताओं के मुखारविन्द से शोभायात्रा की प्रशंसा सुनकर मन ही मन खुशी तथा गर्व अनुभव कर रहा था। आर्य समाज बड़ाबाजार के भूतपूर्व मन्त्री श्री आनन्द देव आर्य जी को कहते हुए सुना कि हम कलकत्ता में लाखों रूपये खर्च करके ऐसी शोभायात्रा निकाल नहीं पाते हैं। सुनकर मन आनन्द से झूम उठा, सोचा, सफल हुआ हमारा परिश्रम, शोभायात्रा को देखकर मन में भाव उठ रहा था 'न भविष्यति' तो नहीं कहेंगे क्योंकि हम आर्य समाजी आशावादी हैं और भविष्यत् में इससे भी अधिक भव्य, चित्ताकर्षक, सुसज्जित बनाने का प्रयासरत रहेंगे। परन्तु यह सत्य है कि 'न भूतः' ऐसा कभी न हुआ, न कभी देखा।

इस शोभायात्रा का नेतृत्व कर रहे थे सिर में केसरी रंग की ओ३म् टोपी, स्कन्ध पर गायत्रीमन्त्र खचित केसरी रंग की उत्तरीय, हाथ में ओ३म् पताका लिए हुए आर्य समाज के मेरुदण्ड, स्वागताध्यक्ष श्री श्रीराम आर्य, मुख्य अतिथि श्री जगदीश प्रसाद केडिया, संयोजक श्री खुशहाल चन्द आर्य, स्वागतमन्त्री श्री प्रमोद आर्य, श्री आनन्द देव आर्य, श्री मदन लाल सेठ, श्री छोटेलाल सेठ, श्री राजमणि वर्मा, श्री स्वदेश आर्य, श्री राधेश्याम अग्रहरि तथा श्री दीपक आर्य। शोभा यात्रा का संचालन का सम्पूर्ण भार श्री सुरेश अग्रवाल जी के हाथ में था। आर्यों का उत्साह देखकर मन में भाव उठ रहा था कि निराशा की कोई बात नहीं है। श्री अतुल प्रसाद की बंगला भाषा में एक कविता याद आ गई, 'बल, बल, बल सबे' शत वीणा वेणु रवे, भारत आबार जगत् सबार श्रेष्ठ आसन् लभे। शोभा यात्रा में उत्साह, उल्लास तथा आर्यों की मस्ती देखकर श्री जगदीश प्रसाद केडिया, प्रधान, बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा स्वतः बोल पड़े—मैं इस प्रकार सम्मेलन में सम्मिलित होकर अपने को धन्य तथा गर्वित अनुभव कर रहा हूँ।

सम्मेलन स्थल विद्यासागर हाल खचाखच भरा हुआ था कि तिल रखने की जगह भी नहीं थीं। वेद सम्मेलन दूसरे दिन दोपहर तीन बजे से ५ बजे तक चलता रहा, जिसकी अध्यक्षता स्थानीय विद्यासागर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष श्री डा० अजय मिश्र एवं संचालन श्री पं० मधुसूदन शास्त्री तथा पं० अपूर्व देवशर्मा ने किया। बंगाल में बंगभाषियों के बीच बंग भाषा में इस प्रकार सम्मेलन यद्यपि प्रथम प्रयास था परन्तु यह प्रेरणाप्रद प्रभावोत्पादक रहा। उद्‌बोधनी भाषण में पं० वेद प्रकाश शास्त्री ने सभी वक्ताओं को 'वेद तथा दयानन्द' इस विषय को अवलम्बन करके अपने-अपने वक्तव्य रखने का आग्रह करते हुए कहा कि सायण, महीधर, मैक्समूलर, मैकडोनाल्ड आदि विद्वानों की तुलना में महर्षि दयानन्द का वेदभाष्य विज्ञानसम्मत, युक्तियुक्त, तर्क, बुद्धि, विवेक, नैतिकता, धार्मिकता, मानविकता तथा निरुत्त, निघन्टु, व्याकरण और ब्राह्मण ग्रन्थादि शास्त्र सम्मत शुद्ध, पवित्र, सर्वमान्य और सर्वकल्याणकारी है।

भोजन व्यवस्था मालिग्राम आर्य समाज के युवक तथा कलकत्ता आर्य समाज की युवक सभा ने बड़े सुन्दर और सहृद्‌यता के साथ की। पाककौशल, स्वाद, स्वच्छता और मेनु आदि देखकर विशिष्ट आर्यजनों

www.thearyasamaj.org

को कहते हुए सुना गया है कि भोजन व्यवस्था किसी विवाह या आनन्दोत्सव से कम नहीं थी।

आर्यजनों, विद्वानों तथा अतिथियों के ठहरने की व्यवस्था बढ़िया थी। सुन्दर, सुसज्जित थी। स्वच्छ, ए.सी. रुम तथा बड़े बड़े हाल बुक किए गए थे। सभास्थल और निवास स्थान पर ले आने और ले जाने के लिए बस और मारुति वैन की व्यवस्था थी।

स्त्री आर्य समाज भवानीपुर की माताओं का दीवानापन देखकर धन्यवाद न देकर हम रह नहीं सकते। उन माताओं में बहुतों को उठने-बैठने चलने-फिरने में कष्ट एवं असुविधा रहने पर भी वे सुदूर कलकत्ता से आयीं और हमारे सम्मेलन के हर कार्यक्रम में बड़े ही श्रद्धा, आस्था, भक्ति तथा उत्साह के साथ भाग लेती रहीं और इन माताओं को एक नूतन और अनजाने जगह पर ले आने में पण्डिता अर्चना शास्त्री की भूमिका पर हम नतमस्तक हैं।

सम्मेलन की शुरु से तैयारी सफल परिसमाप्ति तक रात दिन एक करके अक्लान्त परिश्रम, त्याग और तपस्या करके अर्थ संग्रह, सम्पूर्ण सुव्यवस्था तथा जनप्रतिनिधियों से सम्पर्क आदि सम्पूर्ण कार्यक्रमों में जिनके महत्वपूर्ण, सर्वश्रेष्ठ योगदन रहा वे हैं सर्वश्री दीपक आर्य, सुरेश अग्रवाल, पं० मधुसूदन शास्त्री।

इस सफल समारोह में सभी दानी महानुभावों विशेषकर श्री रोशनलाल अग्रवाल, श्री जगदीश केडिया, श्रीमती सुषमा अग्रवाल, श्रीमती सुषमा गोयल, श्री जगदीश आर्य तथा विशेष सहयोग के लिए आर्य समाज कलकत्ता के प्रधान श्री मनिराम आर्य, मन्त्री श्री सत्यप्रकाश जायसवाल, भूतपूर्व प्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, श्री अच्छेलाल सेठ, श्री ध्रुवचन्द्र जायसवाल, श्री रणजीत झा आदि सज्जनों तथा सभी सभासदों, आर्य समाज बड़ाबाजार, आर्य समाज हावड़ा के सभी सदस्य, स्त्री आर्य समाज भवानीपुर, सभी विद्वानों विशेष करके पं० आत्मानन्द शास्त्री, पं० नचिकेता भट्टाचार्य, पं० देवनारायण तिवारी तथा पं० योगेशराज उपाध्याय जी का हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

सर्वोपरि जिनके प्रेरणा, सदुपदेश, जीवन दर्शन, स्नेह, प्रीति, आर्शीवाद और सत् परामर्श पाकर हम बंग भाषी विद्वान्, विद्वान् कहलाने के योग्य बने तथा वेद और ऋषि दयानन्द के आदर्शों का प्रचार करने के लिए ऊर्जा, उत्साह, इच्छा शक्ति तथा सत् साहस प्राप्त कर सके, ऐसे आर्य जगत् के सुमहान् यशस्वी लेखक, चिन्तक, वेदज्ञ, वेदभक्त, ऋषिभक्त, विद्वद्वरेण्य आचार्य प्रवर श्री उमाकान्त उपाध्याय जी को अनेक अनेक धन्यवाद तथा उनके चरणों में प्रणाम।

बंगाल (आर्य समाज) के इतिहास में इस प्रकार विशाल समारोह करना और वह भी अभूतपूर्व आस्था, श्रद्धा, भक्ति, उत्साह, उल्लास, उद्दीपना से समन्वित होना सचमुच अनोखी तथा क्रान्तिक्रारी घटना है, जिसे देखकर स्वागतमन्त्री श्री प्रमोद आर्य जी कहने लगे कि इस प्रकार सम्मेलन हर वर्ष किये जाएं और इसलिए कलकत्ता के हम तैयार रहेंगे। सुनकर हम उत्साहित हैं और आगामी वर्ष नवम्बर २०१४ को नन्दकुमार में इससे भी भव्य समारोह करने की तैयारी कर रहे हैं और बंगाल के ग्रामीण भाग में आर्य समाज के प्रचार प्रसार हेतु कार्यक्रम करने का विचार विमर्श कर रहें हैं। धन्यवाद।

निवेदक :

**पं० वेदप्रकाश शास्त्री, मन्त्री**

बंगीय वेद प्रचार सभा, कलकत्ता

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ २ शेषांश

जुगलकिशोरजी ने आर्यसमाज और उसके मिशन को बड़ी आत्मीयता से अपनाया था और सदा उसका सहयोग किया करते थे । जब हैदराबाद का प्रसिद्ध सत्याग्रह आर्यसमाज ने छेड़ा था, उस समय श्री बिड़लाजी ने आर्य हिन्दु धर्म सेवा संघ स्थापित किया था । पं० प्रियदर्शनजी सिद्धान्तभूषण के संस्मरणों के अनुसार यह संगठन मूलरूप से हैदराबाद सत्याग्रह को बल देने के लिए आरम्भ हुआ था । पीछे जब हैदराबाद का सत्याग्रह समाप्त हो गया तो बिड़लाजी ने इस संगठन को सामान्यरूप से आर्य हिन्दु-धर्म-सेवा के कार्य में नियुक्त कर दिया ।

श्री बिड़लाजी में परम धार्मिक उदारता थी, पर साथ ही वे भारत, भारतीयता और हिन्दुत्व के कट्टर भक्त थे । यथाशक्ति इन कार्यों में सहयोग दिया करते थे । श्री बिड़ला जी कलकत्ता में आर्यसमाज और आर्य प्रतिनिधि सभा को भी सहायता पहुँचाया करते थे । द्वितीय विश्वयुद्ध के समाप्त होते-होते देश में एक ओर राजनीति का चक्र उग्र हो उठा था तो दूसरी ओर साम्प्रदायिकता का चक्र भी बड़ीं तीव्रता से उग्रता धारण कर रहा था । यह साम्प्रदायिकता जहाँ भारत और भारतीयता के लिए अनिष्टकर थी, वहीं इससे हिन्दु और हिन्दुत्व को भी बड़ा भय उपस्थित हो गया था । श्री बिड़लाजी इस भारत-भारतीयता और हिन्दुत्व के अनिष्ट के भय से चिन्तित थे । श्री पं० प्रियदर्शनजी सिद्धान्तभूषण के संस्मरणों से यह पता चलता है कि श्री बिड़लाजी ने उस समय के प्रसिद्ध आर्य विद्वान् और मिशनरी प्रचारक श्री पं० दीनबन्धुजी के वेदशास्त्री को बुलाकर इस सम्बन्ध में उनसे परामर्श किया और धर्म एवं जाति की रक्षा के लिए पं० दीनबन्धुजी के संरक्षण में बंगाल और आसाम में वेदधर्म एवं हिन्दू जातीयता के लिए व्यापक कार्य आरम्भ किया । यह कार्य पं० दीनबन्धुजी वेदशास्त्री की देख-रेख में हो रहा थी और सारी आर्थिक व्यवस्था श्री बिड़लाजी की ओर से हो रही थी । पं० दीनबन्धुजी वेदशास्त्री आर्यसमाज कलकत्ता के अभिन्न अंग और मिशनरी उपदेशक थे । इस कार्य के लिए वे आसाम में जा डटे । उस समय पं० प्रियदर्शनजी आर्यसमाज राजशाही, पूर्वी बंगाल में थे । पं० दीनबन्धुजी ने व्यक्तिगत रूप से उन्हें इस सारी व्यवस्था के सम्बन्ध में पत्र लिखा और उससे यह समझ में आता हैं कि श्री बिड़लाजी के कार्यक्षेत्र का आयाम कितना बहुमुखी और कितना व्यापक था ।

आर्यसमाज कलकत्ता के आचार्य पं० अयोध्या प्रसादजी जब विदेश यात्रा पर प्रचारार्थ गये थे, उस समय भी श्री बिड़लाजी ने उदारता पूर्वक सहायता की थी । पं० अयोध्याप्रसाद जी के विदेश गमन और सफलता पूर्ण प्रचार का वर्णन कर चुकने के पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सत्ताईस वर्षीय कार्य-विवरण के पृ० ११८ पर निम्न प्रकार से वर्णन है—

'दानवीर श्री सेठ जुगलकिशोरजी बिड़ला से सहायता—दानवीर श्री सेठ जुगलकिशोरजी बिड़ला गत तीन वर्षों मे ३०० रु० मासिक विदेश प्रचार कार्य के लिए सहायता रूप इस सभा को देते रहे हैं । श्री सेठजी इस सभा को देश तथा विदेश में प्रचारार्थ आर्थिक सहायता समय-समय पर आवश्यकतानुसार देते रहते हैं । इस सबके लिए यह सभा उनकी आभारी है ।'

श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला पं० दीनबन्धुजी वेदशास्त्री को भी नियमित रूप से आर्थिक सहायता दिया करते थे ।

www.thearyasamaj.org

# आर्य समाज कलकत्ता का १२८वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी, कोलकाता-६ का १२८ वाँ वार्षिकोत्सव शंनिवार २१ दिसम्बर से रविवार २९ दिसम्बर २०१३ पर्यन्त हृषिकेश पार्क (निकट-सिटी कॉलेज) आम्हर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता-९ में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जायगा। जिसमें प्रतिदिन प्रातः सामवेद पारायण यज्ञ, अपराह्न व सायंकाल विभिन्न सम्मेलन तथा सायंकालीन सत्र में आमिन्त्रत वैदिक विद्वानों के विभिन्न विषयों पर सारगर्भित उपदेश व भजन होंगे ।

**आमन्त्रित विद्वान्**

(१) स्वामी ऋतस्पति जी परिब्राजक (२) डा० धर्मवीर जी (३) सुश्री अञ्जलि आर्या

**मुख्य कार्यक्रम :-**

प्रतिदिन प्रातः ७.३० बजे से ९.३० बजे तक - **सामवेद पारायण यज्ञ**

प्रतिदिन प्रातः ९.३० बजे से १०.३० बजे तक - **भजन व व्याख्यान**

प्रतिदिन प्रातः १०.३० बजे से १२ बजे तक - **बंग भाषा कार्यक्रम**

प्रतिदिन सायं ४ बजे से ६ बजे तक - **बंग भाषा कार्यक्रम**

प्रतिदिन सायं ६ बजे से ९.३० बजे तक - **संध्या भजन व व्याख्यान**

२१ दिसम्बर २०१३- **विशाल एवं सुसज्जित शोभा-यात्रा** - अपराह्न २ बजे से ५ बजे तक

२२ दिसम्बर २०१३--**बालक सत्संग**—अपराह्न ३ बजे से ५.३० बजे तक

२३ दिसम्बर २०१३-**स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस**--(सायं ७ बजे से ९.३० बजे तक)

२४ दिसम्बर २०१३-**राष्ट्र रक्षा सम्मेलन**–(सायं ६.३० बजे से ९-३० बजे तक)

२५ दिसम्बर २०१३-**महिला सम्मेलन**—(अपराह्न २ बजे से ५.३० बजे तक)

२६ दिसम्बर २०१३-**अभिनन्दन समारोह**—(सायंकालीन सत्र में)

२७ दिसम्बर २०१३-**वेद सम्मेलन**–(सायं ६.३० बजे से ९.३० बजे तक)

२८ दिसम्बर २०१३-**भजन व व्याख्यान**—(सायंकालीन सत्र)

२९ दिसम्बर २०१३-**सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति, सामूहिक सत्संग, ऋषि लंगर एवं शंका समाधान**

समस्त कार्यक्रमों में आप सादर आमन्त्रित हैं।

**द्रष्टव्य : कार्यक्रम में परिवर्तन का अधिकार सुरक्षित है।**

प्रधान — **मनीराम आर्य**

मन्त्री — **सत्यप्रकाश जायसवाल**

www.thearyasamaj.org



# मेदिनीपुर में आयोजित वेद प्रचार सम्मेलन का दृश्य

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए पं० उमाकान्त उपाध्याय, एम०ए० द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रौ, कोलकाता-६ में मुद्रित । मो. : ९८३०३७०४६३